1
2-9-4 (1—8)|

(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Not in assessment period

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 13 March 2020 No. III

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

Scanned with ACE Scanner

- तबले में प्रयुक्त वर्तमान वर्ण — 274-275
  डॉ. अमित कुमार ईश्वर, तबला संगतकार, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी
- राजनीति व प्रशासनिक क्षेत्रों में भ्रष्टाचार की समस्या — 276-278
  डॉ. अनिष कुमार सोनकर, UGC-NET पूर्व शोधछात्र, राजनीति विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
- बाबासाहब डा. अम्बेडकर के शिक्षा नीति एवं प्रतिबद्ध लोक सेवा — 279-286
  डॉ. सुनिल कुमार, पीएच. डी. (इतिहास), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- यजमानी ब्राह्मणों के बीच स्वार्थ संघर्ष और विभेदन — 287-294
  डॉ. अवध पटेल, पीएच. डी. (इतिहास), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- चम्पारण में नील की खेती का इतिहास — 295-300
  डॉ. रवि कुमार, पीएच. डी. (इतिहास), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- बिहार में नक्सलवाद के कारण : एक अध्ययन — 301-307
  डॉ. पंकज कुमार, पीएच. डी. (इतिहास), बी. आर ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- संगीत की दृष्टि से 'प्रबन्ध' — 308-313
  डॉ. स्वरवन्दना शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत गायन, वसन्त कन्या महाविद्यालय, वाराणसी
- पटना जिले में वायु-प्रदूषण की पर्यावरणीय समस्या : एक भौगोलिक विश्लेषण — 314-320
  साधना कुमारी, सहायक प्राध्यापिका, एस.डी. कॉलेज, परैया, गया (बिहार)

Scanned with ACE Scanner

संगीत की दृष्टि से 'प्रबन्ध'

*डॉ. स्वरवन्दना शर्मा**

संगीत की शास्त्रपरक चर्चा के प्रसंग में प्रबन्ध एक विशेष पारिभाषिक शब्द है। 'प्रबन्ध' का अर्थ है प्र अर्थात् प्रकृष्ट रूप से बँधा हुआ। संगीत के सन्दर्भ में प्रबन्ध का अर्थ है स्वर - ताल और पद (शब्द) से प्रकृष्ट रूप से अर्थात् भलीभाँति बँधी हुई रचना, जिसे हम सामान्यतः बंदिश शब्द से कहते हैं। 'बंदिश' में भी बँधे होने का अर्थ समाया हुआ है।

मध्यकाल के संगीतशास्त्र के ग्रंथों में विशेषतः शार्ङ्गदेव के संगीतरत्नाकर और राणा कुंभा के संगीतराज में प्रबन्ध का विस्तृत वर्णन मिलता है, जिसे इस सारणी की सहायता से समझ सकते हैं –

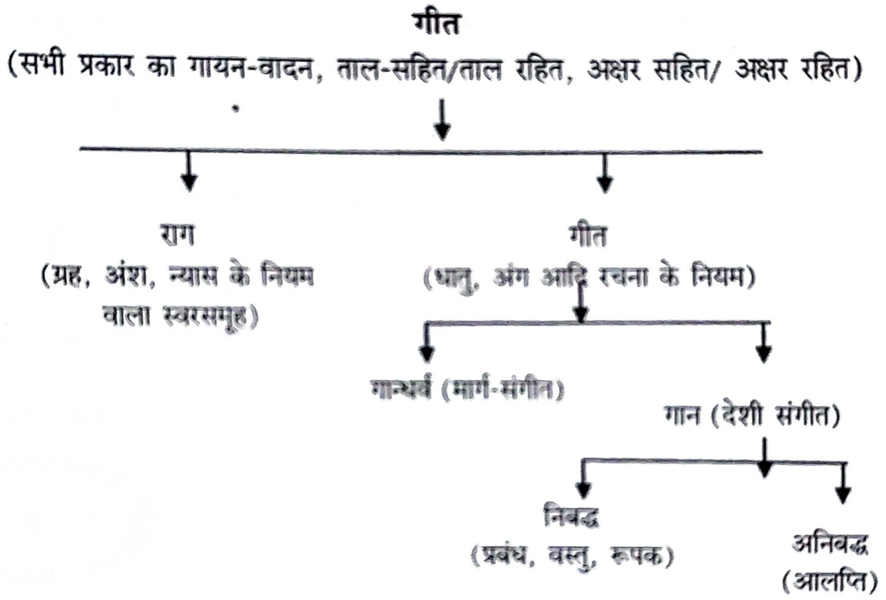

इस सारणी के अंत में निबद्ध (बँधा हुआ) के अंतर्गत प्रबन्ध, वस्तु और रूपक को गिना गया और अनिबद्ध (बिना बँधा हुआ) के अंतर्गत आलप्ति को गिना गया है।

प्रबन्ध में चारों धातु और छहों अंग होते हैं, वस्तु में धातु और अंग की संख्या कम होती है, जिसे आजकल चीज़ कहते हैं, जिसमें नाट्यतत्त्व (कथा या घटना) की प्रधानता हो उसे रूपक कहते हैं।

---

* एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत गायन, वसन्त कन्या महाविद्यालय, वाराणसी

Scanned with ACE Scanner

प्रबन्ध के धातु और अंग - भारतीय शास्त्र-परंपरा में कई बार विषय को स्पष्ट करने के लिये मनुष्य की आकृति का आधार लेते हैं। आयुर्वेद के अनुसार मानवशरीर में वात-पित्त-कफ ये धातुएँ तथा हाथ-पैर आदि अंग है। इसी प्रकार प्रबन्ध-पुरुष की उद्ग्राह, मेलापक, ध्रुव और आभोग ये चार धातुएँ बताई गई हैं। कहीं ध्रुव और आभोग के बीच अन्तरा नाम की पाँचवी धातु भी कही है। ये सब गीत के खण्ड हैं। प्रबंध-पुरुष के छह अंग स्वर, बिरुद,पद, तेन, पाट और ताल कहे गये हैं।

धातु - गीत का सबसे पहला भाग उद्ग्राह है। जिसे मुख्यगीत प्रारंभ करने से पहले गाया जाए। कभी पूर्वालाप या कभी गीत के शब्दों को ही भिन्न रूप से गाना इसका उदाहरण है। ध्रुव वह भाग है जो बार-बार दुहराया जाता है। पुराने गीतों/भजनों में पहली पंक्ति के साथ 'ध्रुव' लिखा जाता है। आजकल इसके समानार्थक 'स्थायी' शब्द का प्रयोग करते हैं। स्थायी एक से अधिक आवर्तन की होने पर केवल पहला आवर्तन ही दोहराते हैं। उद्ग्राह और ध्रुव के बीच मेलापक है जिसका अर्थ है मिलाने वाला। इसके उदाहरण उन स्वरप्रयोगों में ढूँढ सकते हैं जो विशेषतः सुगमसंगीत में गीत की कड़ियों के बीच वाद्यों पर बजाए जाते हैं। अंतिम भाग आभोग कहा जाता है। प्रबंध दो या तीन या चार धातुओं (खंड) से बन सकते हैं। पुराने ध्रुपदों में स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग चार खण्ड होते थे। आजकल ज्यादातर बंदिशों में स्थायी-अंतरा दो धातुएँ (खंड) होती हैं। भजन, गीत, ग़ज़ल आदि में अनेक अंतरे होते हैं। इन्हें संचारी-आभोग का परिवर्तित रूप कह सकते हैं।

अंग - प्रबंध-पुरुष के छह अंग हैं- स्वर, बिरुद, पद, तेन, पाट और ताल। तेन और पद नेत्र के समान, पाट और बिरुद को हस्त, ताल और स्वर को चरण के समान माना गया है।

प्रबन्ध-पुरुष

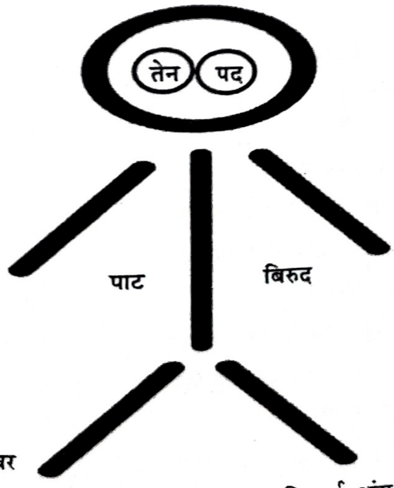

स्वर- इसके बिना प्रबंध गा ही नहीं सकते, यह अनिवार्य अंग है। जैसे- सा रे ग म।

Scanned with ACE Scanner

बिरुद- गुण या प्रशंसासूचक शब्द। जैसे- उदार, दयालु।

पद – बिरुद और तेन (मंगलसूचक) छोड़कर अन्य शब्द। जैसे- ए री आली पिया बिन।

तेन- मंगलार्थक या ईश्वरवाचक शब्द- हरि ऊँ या हरिनाम संकीर्तन।

पाट- तालवाद्य पर बजने वाले अक्षर - धा तिरकिट तक, ता तिरकिट तक।

यह तालवाद्य पर बजने के साथ अनेक बंदिशों के अंतर्गत आता है और अवनद्धवाद्यों की अपनी प्रबन्ध-रचना (बोल, कायदा, परन) में तो होता ही है।

ताल- संगीत के समय को नापने का साधन। यह भी प्रबन्ध का आवश्यक अंग है।

प्रबंध-पुरुष के चरण के रूप में स्वर-ताल को बताये जाने का कारण यह है कि जैसे बिना पैर के मनुष्य चल नहीं सकता वैसे ही स्वर-ताल के बिना प्रबन्ध अर्थात् बंदिश चल नहीं सकती। प्रबंध के छह अंगों में से छह, पाँच, चार, तीन या दो अंगों से प्रबंध-रचना हो सकती है। प्रायः दो अंगों में स्वर और ताल या कहीं ताल के स्थान पर पद/विरुद/तेन के साथ भी प्रबंध रचना मानी गई है। बंदिश सरगमगीत हो तो स्वर और ताल - ये दो अनिवार्य अंग हैं ही यदि कोई तालबद्ध किये बिना शब्दों को स्वरबद्ध करके गाये तो वहाँ स्वर के साथ पद/बिरुद/तेन यह दूसरा अंग हो जाएगा, जिसमें शब्दों के काल-मान में ताल छिपा रहेगा।

प्रबन्ध के भेद – प्रबन्ध के तीन प्रमुख भेद इस प्रकार हैं –

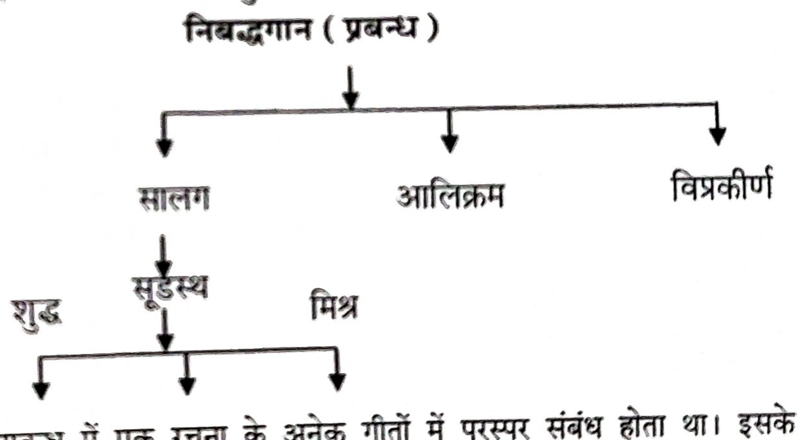

सूडप्रबन्ध में एक रचना के अनेक गीतों में परस्पर संबंध होता था। इसके अनेक भेद-उपभेद थे। आलिक्रम में भी गीतों में संबंध था, पर भेद कुछ कम थे। विप्रकीर्ण परस्पर संबंध के बिना स्वतंत्र रूप से गाने लायक प्रबन्ध थे।

सूडप्रबन्ध का मुख्य उदाहरण जयदेव का गीतगोविंद है जिसमें 24 गीत (अष्टपदियाँ) कथा के रूप में जुड़े हुए हैं। कहीं दो गीतों को जोड़ने के लिये बीच में श्लोक रखे गए हैं।

आलिक्रम प्रबन्धों के प्रकार में पंचतालेश्वर, तालार्णव (तालसमुद्र अर्थात् तालों का भंडार), रागकदम्ब (रागों का समूह) नामों से ही पता चलता है कि इसमें एक से अधिक तालों और रागों का प्रयोग होता रहा होगा। अतः उन गीतों या

Scanned with ACE Scanner

गीतखंडों में परस्पर संबंध होता होगा। अन्यान्य भेदों में गद्य, दण्डक, आर्या, गाथा, त्रोटक जैसे नाम हैं, जो काव्य में छंदों के नाम हैं। इसका एक भेद स्वरार्थ प्रबन्ध है, जिसमें स्वर के अक्षरों की कविता उन्हीं स्वरों में गाई जाती थी। जैसे- 'नीर गगरी गिरी नार से' की स्वरलिपि है - नि रे गगरे गरे निरे सा।

विप्रकीर्ण का अर्थ है फुटकर। जो प्रबन्ध सूड और आलिक्रम में नहीं आते वे विप्रकीर्ण कहे गये। ये अपने आप में स्वतंत्र अर्थात् मुक्तक काव्य की तरह कथासूत्र से अलग माने गये। इसके भेदों में त्रिपदी, चतुष्पदी, षट्पदी, चतुरंग आदि हैं। धम्माली नामक भेद आज का धमार है।

आज गाई जाने वाली ज्यादातर बंदिशें विप्रकीर्ण के अंतर्गत आती हैं। प्रयत्न करने पर कहीं-कहीं बड़े और छोटे ख्याल की बंदिशों में कथा-सूत्र जोड़ सकते हैं। जैसे- राग दरबारी कानड़ा के बड़े ख्याल – 'मुबारकबादियाँ, शादियाँ' और छोटे ख्याल – 'बन्दनवा बाँधो रे बाँधो सब मिल के मालनिया' में शादी की मुबारकबाद और उसके लिए साजसजावट करने की बात कही जा रही है।

वर्तमान समय में प्रबन्ध अर्थात् बंदिशों के निम्न प्रकार अधिक प्रचलित हैं –

ध्रुपद - प्रायः मध्यलय की बंदिश जो 12 मात्रा के चौताल में होती है। सूलताल (10 मात्रा) और तीवरा (7 मात्रा) में द्रुत बंदिश होती है। संगीत की प्रशंसा, ईश्वर या राजा की स्तुति, प्रकृति, दर्शन संबंधी विषयों का वर्णन होता है। पुराने ध्रुपदों में स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग होता था, आजकल पहले दो खंड होते हैं। जैसे- राग यमन का ध्रुपद - तू ही भज भज रे मना।

धमार – 14 मात्रा के धमार नामक ताल में प्रायः राधा-कृष्ण की होरी, फागुन मास, वसन्त ऋतु का वर्णन होता है। जैसे- राग बागेश्री का धमार - आयो फागुन मास।

ध्रुपद-धमार दोनों में बंदिश के पहले नोम्-तोम् का आलाप, बंदिश के साथ-साथ हाथ से ताली देकर लयकारी के साथ उपज का काम और पखावज पर संगत होती है।

खयाल – मुख्यतः विलंबित और द्रुत दो प्रकार के खयाल होते हैं, कुछ बंदिशें मध्यलय की होती हैं। इन सब बंदिशों के साथ आलाप-तान गाते हुए मुखड़े के साथ सम दिखाते हैं। विलंबित ख्याल एकताल (12 मात्रा), झूमरा (14 मात्रा), तिलवाड़ा (16 मात्रा) तालों में और द्रुत ख्याल एकताल (12 मात्रा), आड़ाचौताल (14 मात्रा) और त्रिताल (16 मात्रा) तालों में और मध्यलय ख्याल रूपक (7 मात्रा), झपताल (10 मात्रा) और त्रिताल (16 मात्रा) में गाए जाते हैं। ईश्वर, संगीत, प्रकृति, नायक-नायिका संबंधी वर्णन होता है। गाने में शब्द की तुलना में राग-ताल को महत्त्व दिया जाता है। उदाहरण के लिये राग बिहाग का बड़ा ख्याल - कैसे सुख सोवे नींदरिया और छोटाख्याल - लट उलझी सुलझा जा बालम, दुर्गा का मध्यलय - सखि मोरी रुमझुम। इसकी संगत तबले पर होती है।

तराना- प्रायः अर्थरहित शब्दों को राग-ताल में बाँधते हैं जिसमें स्वर-लय का चमत्कार मुख्य होता है। कुछ विद्वान इसके शब्दों का कूट (गुप्त) अर्थ भी बताते हैं।

Scanned with ACE Scanner

इसका विस्तार कभी तानों से और कभी तेज गति में 'दिर-दिर तननन' बोलों से किया जाता है। जैसे - राग मालकौंस में - तोम तनन तन देरेना।

ठुमरी-दादरा – ये प्रायः साथ बोले जाने वाले नाम हैं और शास्त्रीय संगीत के ध्रुपद-खयाल प्रकारों के बाद उपशास्त्रीय संगीत के रूप में कहे जाते हैं। इनकी बंदिशें प्रायः शृंगार-प्रधान होती हैं। ठुमरी की बदिशों का भाव के आधार पर बोल-बनाव से विस्तार किया जाता है। दादरा गतिप्रधान गीतप्रकार है। धीमी लय की ठुमरी दीपचंदी (14 मात्रा) और जतताल (16 मात्रा) में गाते हैं और द्रुतलय की ठुमरी और दादरा ये दोनों ही कहरवा (8 मात्रा) और दादरा (6 मात्रा) तालों में गाते हैं। जैसे- राग भैरवी की धीमी ठुमरी - जा मैं तोसे नाहीं बोलूँ, द्रुतलय की ठुमरी बंदिश की ठुमरी कही जाती है जैसे खमाज में - कोयलिया कूक सुनावे और भैरवी में दादरा - आया करे जरा कह दो साँवरिया से।

टप्पा – टप्पा भी अपेक्षाकृत चंचलगीत प्रकार है, जिसमें खास तरह की घुमावदार तानों का प्रयोग विशेष होता है अतः जटिल और श्रमसाध्य होता है। अधिकतर बंदिशें पंजाबी भाषा में होती हैं। टप्पा के प्रचार-प्रसार के साथ प्रायः शोरी मियाँ का नाम लिया जाता है। 16 मात्रा के पंजाबी या अद्धा तालों के साथ इसे गाया जाता है। राग काफी का प्रसिद्ध टप्पा है - ओ मियाँ जाने वाले।

कुछ विशेष प्रबंधों के प्रकार –

त्रिवट – इसके संबंध में दो मत हैं। पहला मत केवल अवनद्ध वाद्यों के पाटाक्षर से बनी बंदिश को त्रिवट या तिरवट कहता है। दूसरे मत में 'त्रि' शब्द को प्रधानता देते हुए सार्थक शब्द, सरगम और तबले के बोल अथवा तराना, सरगम और तबले के बोल से बनी बंदिश त्रिवट कही जाती है। यह बहुत दुर्लभ प्रकार है। बंदिशः प्रायः द्रुतख्याल वाले तालों में होती है। इसे ख्याल की तरह तान से सजाते हैं। पहले प्रकार का उदाहरण मालकौंस में - त्रक धिकिट धान धान धान धा, ता धा, दूसरा प्रकार भूपाली में- धिरकिट तक धी धी ना।

चतुरंग - इसके नाम से स्पष्ट है कि यह चार अंगों से मिलकर बनी रचना होती है। सार्थक शब्द, तराना, सरगम और तालवाद्य के अक्षरों से यह आकार लेती है। कभी-कभी संस्कृत के श्लोक या उर्दू/अरबी की कुछ लाइनें भी ली जाती हैं। यह भी अप्रचलित प्रकार है। इसका विस्तार भी छोटे ख्याल जैसा जादातर तानों से किया जाता है। जैसे- राग सिंधूरा में – चतरंग गाओ गुनि सब मिल कर।

सादरा – झपताल में बनी ऐसी विशेष रचना जिसमें झपताल का 2-3-2-3 मात्रा-विभाजन वाला छंद छिप जाता है। मोटे तौर पर सुनने में त्रिताल की बंदिश प्रतीत होती है लेकिन बड़ी सुघड़ता और कुशलता से वह झपताल में सजाई हुई होती है। उछलती लय वाली इस बंदिश में आलाप-तानों का बर्ताव भी उससे मेल खाता हुआ लयप्रधान किया जाता है। जैसे राग मारवा में- सखि धूम मची झपताल की। कुछ विद्वान झपताल में बनाये वैशिष्ट्यपूर्ण ध्रुपद को सादरा कहते हैं और उसका संबंध दिल्ली के पास के शाहदरा गाँव से बताते हैं।

Scanned with ACE Scanner

रागसागर या रागमाला – नाम से समझ में आता है कि यह रागों के समूह से बनी रचना है। सबसे अधिक चर्चित रागमाला 'एमन हमीर छाया परे स्याम की, हर दरबार में कहावे नायकी' है जिसमें अलग-अलग रागनामों के शब्द उस-उस राग के स्वरों में बाँधे गये हैं। कुछ ऐसी बंदिशें भी हैं, जिसमें रागनामों से अलग कविता है और अनेक रागों में बिठाई गई है। जैसे 'इंद्रधनु' नाम से 7 रागों में - ए बेलरिया हरी झुकि रही। इसका विस्तार करते समय अंगभूत रागों को सम्हालकर मिलाते हुए गाना होता है।

कैवाड़ प्रबन्ध – केवल पाटवर्णों अर्थात् तबला या पखावज के बोलों से बनी सार्थक या निरर्थक गीतरचना। (एक मत से यह त्रिवट के अंतर्गत होगा।) इसके भेद के रूप में तराना के बोलों से बनी सार्थक गीत-रचना। यह भी बहुत दुर्लभ गीत-प्रकार है। जैसे रागेश्री में- तुम देरे तुम देरे दानी दयादान।

स्वरार्थ प्रबन्ध – नाम से ही स्पष्ट है कि सात स्वरों के अक्षरों से बनी सार्थक कविता, जिसे उन्हीं स्वरों में बाँधा जाए, स्वरार्थ-प्रबन्ध कही जाती है। इसकी अधिकतम 7, कहीं 6 और 5 ही निश्चित अक्षरों की काव्यरचना भी पर्याप्त कुशलता और सजगता माँगती है और संगीत की दृष्टि से राग के रूप को भी संभालने की तार्किक बुद्धि माँगती है। जैसे - 'नीर गगरी गिरी नार से' को इन्हीं अक्षरों वाले स्वरों में यमन में गाया जाएगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संगीत में क्रियाप्रधान और विचारप्रधान दोनों ही पक्षों का सुन्दर समन्वय 'प्रबन्ध' के रूप में दिखाई देता है।

सहायक ग्रन्थ –

1. भावरंगलहरी- प्रथम भाग, पं० बलवन्तराय भट्ट, वाराणसी, 1964.
2. भावरंगलहरी- द्वितीय भाग, पं० बलवन्तराय भट्ट, वाराणसी, 1974.
3. संगीत-जिज्ञासा और समाधान, डॉ० तेजसिंह टाक, बेकरा आलमी फाउण्डेशन, लखनऊ, 2001.
4. भारतीय संगीत कोश, श्रीविमलाकान्त राय चौधरी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975.
5. क्रमिक पुस्तक मालिका- तृतीय भाग, पं० भातखंडे, संगीत कार्यालय, हाथरस, 1979.
6. क्रमिक पुस्तक मालिका- चतुर्थ भाग, पं० भातखंडे, संगीत कार्यालय, हाथरस, 1979.
7. संगीतांजलि- द्वितीय भाग, पं० ओम्कारनाथ ठाकुर, वाराणसी, 1975.
8. रागविज्ञान, प्रथम भाग, पं० विनायकराव पटवर्धन, संगीत-गौरव-ग्रंथमाला, पुणे, 1978.
9. रागविज्ञान, द्वितीय भाग, पं० विनायक पटवर्धन, संगीत-गौरव-ग्रंथमाला, पुणे, 1970.
10. रागविज्ञान, तृतीय भाग, पं० विनायक पटवर्धन, संगीत-गौरव-ग्रंथमाला, पुणे, 1967.

***

Scanned with ACE Scanner

1
2-9-1
(1-10) 1

UGC Journal No. : 41784 ISSN: 2349-5928

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE REVIEW

(An International Peer Reviewed Refereed Journal)

Not in assessment period.

Editor in Chief

Professor Vinay Kumar Pandey
Department of Jyotish, Faculty of S.V.D.V.
Banaras Hindu University,
Varanasi-221005

Scanned with ACE Scanner

2

Cite this Issue

As

Vol. 6 No. 02 *HSS Review* 2019

Humanities and Social Science Review an International peerreviewed Referred Journal is published bi-annually by Vyas Prakashan for Sunil Kumar Tripathi, Pragyanagar Colony Sunderpur, Varanasi-221005, India. Articles and other contributions for possible publication are welcome. Views expressed in the Articles, Shorter Articles, Book Reviews and all other contributions published in this Journal are those of the respective authors and do not necessarily reflect the views of the Editorial Board of the Humanities and Social Science Review and author shall be solely responsible for the same.

COPYRIGHT © 2019 Sunil Kumar Tripathi, Pragyanagar Colony Sunderpur, Varanasi-221005

ISSN: 2349-5928

Email Id. hssreview1@gmail.com

PH. No.+91 9453036274, +91 9452141671

Printed by: Vikash Printer, Varanasi, India.

Published By: Vyas Prakashan, Man Mandir, Varanasi, India.

Price:₹ 500.00

Scanned with ACE Scanner

Humanities and Social Science Review

Vol. 6 No. 02 *ISSN 2349-5928* *July–December 2019*

CONTENTS

S.N.	Title	Pg. No.
1.	Human Rights and Women in India **Dr. Satyanandan Bhagat**	1-05
2.	The Concept of Live in Relationship and its effect on Indian Marriage Institution **Shresth, Saumya Pandey**	06-12
3.	वैदिकलौकिकवाङ्मयेषु संस्कृतकथासाहित्यपरम्परायास्तुलनात्मकमनुशीलनम् **प्रो0 कौशलेन्द्रपाण्डेयः**	13-22
4.	अहर्गणविमर्शः **डॉ0 चन्द्र कान्तः**	23-29
5.	वैदिक देवताओं का उद्भव एवं विकास **डॉ0 कुमकुम पाठक**	30-35
6.	भारतमाता ब्रूते महाकाव्य में प्रकृति–वर्णन **डॉ0 हीरा पाण्डेय**	36-40
7.	श्रौतयाग एवं उसका वैज्ञानिक महत्व **पशुपतिनाथ मिश्रा**	41-43
8.	प्रसादोत्तर हिन्दी नाटकों में अभिव्यक्त नारी समस्याओं का प्रवृत्तिपरक एवं विकासात्मक विश्लेषण **डॉ0 कुमारी विभा**	44-49
9.	बक्सर जिला में गेहूँ उत्पादन के विकास में आधुनिक तकनीक का प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन **डॉ0 विमलेश कुमार**	50-61
10.	गाँधी जी के दर्शन में एकादश व्रतों का विवेचन (आन्तरिक पर्यावरण विशुद्धि के सन्दर्भ में) **निशा**	62-67
11.	व्याकरणदर्शने पश्यन्त्याश्चिद्रूपता **डॉ0 विक्रम अधिकारी**	68-73
12.	वास्तुशास्त्रे भू–चयनसिद्धान्ताः **डॉ. कृष्णकुमार भार्गव**	74-85

Scanned with ACE Scanner

13.	मनुष्यों का श्रेष्ठ नाट्यमण्डप और उसकी रचना–विधि **उदय नारायण मिश्र**	86-94
14.	दामोदर नदी बेसिन क्षेत्र (झारखण्ड) में कृषि जैव विविधता की स्थिति: एक भौगोलिक अध्ययन **मीरा ठाकुर**	95-108
15.	वैदिक कृषि : विज्ञान एवं तकनीक का अवलोकन **कौस्तुभ भट्ट**	109-113
16.	अलंकार : सांगीतिक सन्दर्भ में **डॉ० स्वरवन्दना शर्मा**	114-119
17.	ज्योतिषशास्त्रे कालमानसमीक्षणम् **मधु सूदन पाण्डेय**	120-126
18.	वर्तमान में वास्तुशास्त्र का स्वरूप **आशुतोष तिवारी**	127-131
19.	The Hills of Gaya : A Geographical Study **Sadhana Kumari**	132-141
20.	Vasudhaiva Kutumbakam: A Journey of Life Towards Collectivism **Satyam Shashank Sonkar**	142-147
21.	An appraisal of toilet facilities & solid waste management in the slums of KAVAL cities **Karuna Raj**	148-160
22.	Effects of mustard oil cake on live proteins of channa Punctatus (Bioch) **Dr. Kumari Smita**	161-166
23.	Impact of Gst on Indian Economy **Amit Kumar**	167-176
24.	Library of Things A Movement Towards Unused Resources: A Conceptual Study ***Kumar Rohit***	177-186

Scanned with ACE Scanner

अलंकार : सांगीतिक सन्दर्भ में

डॉ० स्वरवन्दना शर्मा*

अलंकार शब्द को समझने के लिये सर्वप्रथम संस्कृत-शब्दकोश का आधार लेते हुए जानना उपयोगी है। आपटे संस्कृत-हिन्दी-कोश के अनुसार कृ धातु में अलम् उपसर्ग और घञ् प्रत्यय जोड़ने से अलङ्कार शब्द बनता है, जिसका अर्थ है- सजावट, सजाने की क्रिया, आभूषण, शब्दार्थालंकार। काव्य के गुण-दोष बताने वाला शास्त्र अलङ्कार-शास्त्र कहलाता है। घञ् के स्थान पर ल्युट् प्रत्यय से अलंकरण और क्तिन् प्रत्यय से अलंकृति शब्द बनते हैं, इनका भी अर्थ यही है।[1] 'अलङ्क्रियते अनेन इति अलङ्कारः' अर्थात् जिसके द्वारा सजाया जाए वह अलङ्कार है। या यों समझ लें कि किसी वस्तु के सौन्दर्य, शोभा या आकर्षण को बढ़ाने का साधन अलंकार कहा जाता है।

सामान्य जीवन में मानवशरीर को सुशोभित करने वाले हार, कुंडल, कंकण आदि अलंकारों से सभी सुपरिचित हैं। साहित्य के प्रसंग में अनुप्रास आदि शब्दालंकार और उपमा आदि अर्थालंकारों से भी प्रायः सबका परिचय है। पर संगीत के अभ्यासीजनों के लिये इन सबसे भिन्न, अलंकारों का सांगीतिक सन्दर्भ जानना अत्यंत आवश्यक है और रोचक भी।

संगीत संबंधी शास्त्रीय चर्चा प्रायः भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से प्रारंभ होती है, क्योंकि नाट्य से संबंधित समस्त विद्या और कलाओं का तात्त्विक विवेचन वहाँ सूत्ररूप में परिलक्षित होता है। अलंकार का महत्त्व समझाते हुए भरतमुनि नाट्यशास्त्र में कहते हैं कि अलंकार रहित गीति की वही स्थिति होती है जो चन्द्र के बिना रात्रि, जल के बिना नदी, पुष्प के बिना लता और भूषण के बिना नारी की होती है –

शशिना रहितेव निशा विजलेव नदी लता विपुष्पेव।
अविभूषितेव च स्त्री गीतिरलङ्कारहीना स्यात्।।[2]

भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के मुख्य प्रतिपाद्य नाट्य के लिये पाठ्य (वाचिक अभिनय) की दृष्टि से छह अलंकार बताये हैं –

उच्चो दीप्तश्च मन्द्रश्च नीचो द्रुत-विलम्बितौ।
पाठ्स्यैते ह्यलङ्काराः × × × ।।[3]

---

* एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत गायन, वसन्त कन्या महाविद्यालय, वाराणसी

Scanned with ACE Scanner

अर्थात् पाठ्य (वाचिक अभिनय) के छह अलंकार उच्च-दीप्त, मन्द्र-नीच, द्रुत और विलंबित हैं। सारांश में यहाँ इतना ही संकेत करूँगी कि किसी को संबोधन या आश्चर्य या वाद-विवाद में मध्यसप्तक के पंचम से तारसप्तक के ऋषभ तक मध्यगति का प्रयोग उपयोगी होता है, उसी प्रकार कलह, युद्ध का आवाहन, क्रोध का आवेश या गर्वोक्ति या वीरता दिखाने या भय से चीखने में तार सप्तक के उच्च स्वरों का द्रुत गति में प्रयोग प्रभावशाली होता है तथा विराग, दीनता, रुग्णता, निर्वेद या चिन्ता के समय मन्द्र सप्तक के स्वरों का विलंबित गति में प्रयोग प्रभावोत्पादक होता है।[4]

संगीत के सन्दर्भ में वर्ण और अलंकार इनका नाम साथ-साथ लिया जाता है क्योंकि सांगीतिक अलंकार वर्णों पर ही आधारित हैं। नाट्यशास्त्र के अनुसार –

आरोही चावरोही च स्थायीसंचारिणौ तथा।
वर्णाश्चत्वार एवैते ह्यलंकारास्तदाश्रयाः॥[5]

अर्थात् आरोही, अवरोही, स्थायी और संचारी ये चार वर्ण हैं और अलंकार इन पर आश्रित हैं।

शार्ङ्गदेव सङ्गीतरत्नाकर में कहते हैं –

गानक्रियोच्यते वर्णः स चतुर्धा निरूपितः।
स्थाय्यारोह्यवरोही च संचारीत्यथ लक्षणम्॥[6]

अर्थात् गान की क्रिया वर्ण कहलाती है, वह चार प्रकार की बताई गई है - स्थायी, आरोही, अवरोही तथा संचारी। स्थायी अर्थात् एक स्वर पर स्थिर, आरोही में चढ़ता और अवरोही में उतरता क्रम तथा संचारी में ये सभी मिले होते हैं। इसके अतिरिक्त वह यह भी कहते हैं –

विशिष्टवर्णसन्दर्भमलङ्कारः प्रचक्षते।[7]

अर्थात् वर्णों का विशेष संदर्भ अलंकार कहा जाता है।

संगीतशास्त्र के अन्य प्रमुख ग्रन्थ मतंगकृत बृहद्देशी में कहा है –

अलङ्कारशब्देन मण्डनमुच्यते। यथा कटककेयूरादिनालङ्कारेण नारी पुरुषो वा मण्डितः शोभामावहेत् तथा एतैरलङ्कारैः प्रसन्नाद्यादिभिरलङ्कृता वर्णाश्रया गीतिर्गातृश्रोतृणां सुखावहा भवतीति।[8]

अर्थात् अलंकार शब्द से मण्डन (सजावट) कहा जाता है। जैसे कटक, केयूरादि अलंकारों द्वारा नारी अथवा पुरुष मंडित होकर शोभा पाते हैं वैसे ही वर्णों पर आश्रित इन प्रसन्नादि अलंकारों से अलंकृत गीति, गायक और श्रोता दोनों को सुख देती है।

Scanned with ACE Scanner

भरत ने संगीतोपयोगी 33 अलंकार बताये हैं। वर्णों के अनुसार देखने पर स्थायी के 7, आरोही के 13, अवरोही के 5 और संचारी के 14 अलंकार मिलाकर कुल संख्या 39 होती है, लेकिन 6 अलंकार एक से अधिक वर्णों में गिने जाने से मूल संख्या 33 ही रह जाती है। मतंग ने नाम तो लगभग भरत के दिये हुए ही रखे हैं किन्तु उन्हें वर्णों के आधार पर बाँटा नहीं है। ऐसा होते हुए भी अलंकारों के लक्षण दोनों के ग्रंथों में स्पष्ट नहीं है। भरत ने नाम तो गिनाए हैं पर स्वररूप नहीं दिया है। मतंग ने स्वररूप दिये हैं पर पाठ भ्रष्ट और खंडित होने के कारण लक्षण के साथ उसे जोड़ना बहुत कठिन है।[9]

भरत और मतंग के अतिरिक्त अन्यान्य ग्रंथकारों ने भी अलंकारों का निरूपण किया है, विशेष उल्लेखनीय शार्ङ्गदेव कृत संगीतरत्नाकर और अहोबल कृत संगीतपारिजात हैं। यद्यपि इस वर्णन में भी पर्याप्त अंतर दिखाई देता है।

भरत और मतंग के 33 अलंकारों की तुलना में शार्ङ्गदेव ने 63 और अहोबल ने 69 अलंकार कहे हैं। शार्ङ्गदेव ने भरत के समान स्थायी के 7 तो माने हैं, पर 12 आरोही अलंकार जितने ही 12 अलंकार अवरोही वर्ण के भी कहे हैं, संचारी वर्ण के 25 और अतिरिक्त 7 अलंकार बताए हैं। अहोबल ने संचारी 26, तालबद्ध 7 और रागोपयोगी 5 अलंकार बताकर शार्ङ्गदेव से 6 अधिक बताये हैं। कुछ नाम भरत, मतंग, शार्ङ्गदेव तथा अहोबल में एक जैसे हैं। अहोबल ने स्थायीवर्ण-अलंकारों के वैकल्पिक नाम भी दिये हैं। यहाँ यह जानना भी जरूरी है कि अलंकारों के प्रसंग में मन्द्र, प्रसन्न और मृदु का अर्थ भी समान है, तार और दीप्त का अर्थ एक समान है। यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि इस प्रकार 'मन्द्र-मध्य-तार' इन तीन सप्तकों वाले अर्थ से यह भिन्न अर्थ है, जहाँ मूर्च्छना का प्रथम स्वर मन्द्र और उससे दुगुना तार अथवा पहले वाला स्वर मन्द्र और बाद वाला तार कहलाता है।

यही बातें शार्ङ्गदेव ने इस रूप में स्पष्ट की हैं-

मन्द्रः प्रकरणेऽत्र स्यान्मूर्च्छनाप्रथमः स्वरः।
स एव द्विगुणस्तारः पूर्वः पूर्वोऽथवा भवेत्॥
मन्द्रः परस्ततस्तारः प्रसन्नो मृदुरित्यपि॥
मन्द्रस्तारस्तु दीप्तः स्यात् × × ×॥[10]

अलंकारों के समान नाम होने पर भी लक्षण और स्वररूपों का अंतर कुछ उदाहरणों से स्पष्ट होगा -

Scanned with ACE Scanner

क्र.सं.	अलंकार	भरत का लक्षण	मतंग का लक्षण	मतंग का स्वर-रूप
1.	प्रसन्नादि	क्रमशः दीप्त	मन्द्र से तार तक आरोह	सा री गा मा पा धा नी सां
2.	प्रसन्नांत	व्यस्त (उल्टा)	तार से मन्द्र तक अवरोह	सां नी धा पा मा गा री सा
3.	प्रसन्नाद्यन्त	आदि अंत में प्रसन्न	आदि अंत में प्रसन्न, मध्य में तार	सा री गा मा पा धा नी सां सां नी धा पा मा गा री सा
4.	प्रसन्नमध्य	मध्य में प्रसन्न (मन्द्र)	मध्य में मन्द्र, आदि अंत में तार	सां नी धा पा मा गा री सा सा री गा मा पा धा नी सां
		शार्ङ्गदेव का स्वर-रूप	**अहोबल का वैकल्पिक नाम**	**अहोबल का स्वररूप**
1(अ)	प्रसन्नादि	स स सं	भद्र	सरिस रिगरि गमग मपम
2(अ)	प्रसन्नान्त	सं स स	नन्द	सस रिरि सस। रिरि गग रिरि
3(अ)	प्रसन्नाद्यन्त	स सं स	जित	सगरिस। रिमगरि
4(अ)	प्रसन्नमध्य	सं स सं	सोम	सस गग रिरि सस

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि संगीत के शोभाधायक अलंकारों के विषय में शास्त्रकारों का चिन्तन कितना गहरा था, भले ही उनके विचारों में भिन्नता थी। अलंकारों का क्रम और उनके नाम हमारे लिये मनन-चिन्तन का नवीन द्वार खोल देते हैं। यद्यपि आज हम निश्चित क्रम और सुनिश्चित नाम के साथ् अलंकार नहीं जानते हैं तथापि इन अलंकारों का अभ्यास और किसी न किसी रूप में प्रयोग तो संगीत शिक्षा और मंच-प्रदर्शन का अनिवार्य अंग है ही। इस तरह आज हम शास्त्रीय क्रम और नामों की दृष्टि से अलंकारों से भले अपरिचित हों पर व्यावहारिक दृष्टि से उनसे सुपरिचित हैं और भरपूर प्रयोग करते हैं।

संगीतशास्त्रग्रंथों में वर्णित सभी अलंकारों की चर्चा तो यहाँ संभव नहीं है पर कुछ अत्यन्त परिचित और प्रचलित अलंकारों का नाम जानना अवश्य अत्यंत रोचक और ज्ञानवर्धक होगा।

पूर्वोक्त उदाहरणों में से शार्ङ्गदेव के बताये प्रसन्नादि, प्रसन्नान्त, प्रसन्नाद्यन्त प्रसन्नमध्य ये **स्थायी वर्णसंबंधी अलंकार** हैं। शार्ङ्गदेव के अनुसार अन्य वर्णों के कुछ अलंकार इस प्रकार हैं–

आरोही वर्णसंबंधी अलंकार (क्रम 8 से 19 तक) :

क्रम 8. विस्तीर्ण- सा रे ग म प ध नि (अवरोही क्रम 20)

9. निष्कर्ष - (क) सासा रेरे गग मम पप धध निनि (अवरोही क्रम 21)

(ख) सासासा रेरेरे गगग

अथवा – सासासासा रेरेरेरे गगगग, (दूसरा नाम गात्रवर्ण)

12. हसित - सा रेरे गगग मममम पपपपप (अवरोही क्रम 24)

धधधधधध निनिनिनिनिनिनि

Scanned with ACE Scanner

13. प्रेंखित - सारे रेग गम मप पध धनि (अवरोही क्रम 25)

15. सन्धिप्रच्छादन - सारेग गमप पधनि (अवरोही क्रम 27)

19. वेणी - सासासा रेरेरे गगग ममम पपप धधध (अवरोही क्रम 31)

(नि का प्रयोग होने पर गात्रवर्ण)

अवरोही वर्णसंबंधी अलंकार - क्रम संख्या 20-31 तक आरोही के क्रम से अवरोही अलंकार हैं।

संचारी वर्ण संबंधी अलंकार -

क्रम 32. मन्द्रादि - सागरे रेमग गपम मधप पनिध

33. मन्द्रमध्य - गसारे मरेग पगम धमप निपध

34. मन्द्रान्त - रेगसा गमरे मपग पधम धनिप

35. प्रस्तार - साग रेम गप मध पनि

36. प्रसाद - सारेसा रेगरे गमग मपम पधप धनिध

40. आक्षेप - सारेग रेगम गमप मपध पधनि

42. उद्वाहित - सारेगरे रेगमग गमपम मपधप पधनिध

45. प्रेंख - सारेरेसा रेगगरे गममग मपपम पधधप धनिनिध

48. क्रम - सारे सारेग सारेगम, रेग रेगम रेगमप, गम गमप गमपध, मप मपध मपधनि

54. हुंकार - सारेसा, सारेगरेसा, सारेगमगरेसा, सारेगमपमगरेसा, सारेगमपधपमगरेसा, सारेगमपधनिधपमगरेसा

अतिरिक्त अलंकार –

क्रम 58. मन्द्रतार प्रसन्न- सा सां नि ध प म ग रे सा

62. उपलोल – सारे सारे गरे गरे, रेग रेग मग मग, गम गम पम पम, मप मप धप धप, पध पध निध निध[12]

प्रसिद्ध संगीत-मर्मज्ञ श्री विमलाकान्त रायचौधरी अलंकार को समझाते हुए कहते हैं कि अलंकार के दो भेद हैं- वर्णालंकार और शब्दालंकार। स्थायी-आरोही-अवरोही-संचारी वर्णों पर आधारित अलंकार वर्णालंकार कहे जाते हैं, जिनकी चर्चा पहले की जा चुकी है और जो ध्वनि-उच्चारण की विशेषता से संबंध रखते हैं वे शब्दालंकार कहे जाते हैं जिसके उदाहरण मींड, गमक, कृन्तन, आस, खटका, जमजमा आदि हैं। उनके अनुसार हस्तक्रिया भी शब्दालंकार के अंतर्गत गिनी जाती है। यह अलंकार का व्यापक अर्थ है।[13]

Scanned with ACE Scanner

शार्ङ्गदेव के अलंकार-लक्षण को समझाते हुए प्रो० सुभद्रा चौधरी ने उल्लेख किया है कि भरत के टीकाकार अभिनवगुप्त के अनुसार 'अलंकार' शब्द में 'अलं' पर्याप्ति को बताने वाला है, इसलिये गीति में परिपूर्णता लाने के कारण उन्हें 'अलंकार' कहा जाता है।[14]

सन्दर्भ क्रम-

1. आप्टे संस्कृत-हिन्दी-कोश, पृ० 102.
2. ना०शा० 29/45.
3. ना०शा० 17/106.
4. प्र०भा० पृ० 279.
5. ना०शा० 29/17.
6. सं०र० 1/6/1.
7. सं०र० 1/6/2.
8. प्र०भा० पृ० 266.
9. प्र०भा० पृ० 279.
10. सं०र० 1/6/6-8.
11. प्र०भा० पृ० 280 तथा 284.
12. भा०सं०को० पृ० 4-7.
13. भा०सं०को० पृ० 7.
14. सं०र० पृ० 151.

सहायक ग्रन्थ –

1. संस्कृत-हिन्दी-कोश, वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1973.
2. नाट्यशास्त्र, काव्यमाला - 42, भारतीय विद्या-प्रकाशन, दिल्ली, 1983.
3. प्रणवभारती (द्वितीय संस्करण), पं० ओम्कारनाथ ठाकुर, पं० ओ०ठा० मेमोरियल एस्टेट, मुम्बई-1997.
4. संगीत - रत्नाकर, प्रथम खंड, व्याख्या और अनुवाद- प्रो० सुभद्रा चौधरी, (राधा) पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली, 2000.
5. भारतीय संगीत-कोश, श्री विमलाकान्त राय चौधरी, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 1975.

O

Scanned with ACE Scanner

1
2-9-2
(1-9) 1
Not in assessment period

Vol.: 16 (July– December 2019)

ISSN No. : 2277-4270
UGC List No. - 40768

आम्नायिकी

षोडशोऽङ्कः, जुलाई-दिसम्बर, २०१९
षाण्मासिकी अन्ताराष्ट्रिया मूल्याङ्कितशोधपत्रिका
(विश्वविद्यालयानुदानायोग-नईदिल्लीद्वारा अनुमोदिता)

प्रधानसम्पादकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः

सहसम्पादकाः
प्रोफेसरपतञ्जलिमिश्रः डॉ० उदयप्रतापभारती, डॉ० सरोजकुमारपाढी,
डॉ० पुष्पादीक्षितः, डॉ० रमाकान्तपाण्डेयः, प्रो० (डॉ.) देवेन्द्रनाथपाण्डेयः,
डॉ० राकेशकुमारमिश्रः, डॉ० आलोकप्रतापसिंहविसेनः

प्रकाशकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः
वेदविभागः
संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसङ्कायः
काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी-२२१००५

Scanned with ACE Scanner

प्रधानसंरक्षकः

कुलपतिः, काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः

संरक्षकमण्डलम्

प्रोफेसरराजेन्द्रमिश्रः, पूर्वकुलपतिः, सं.सं.वि.वि., वाराणसी।
प्रोफेसरराधावल्लभत्रिपाठी, पूर्वकुलपतिः, राष्ट्रीयसंस्कृतसस्थानम्, नईदिल्ली।
प्रोफेसर मिथिला प्रसाद त्रिपाठी, पूर्व कुलपतिः, पाणिनीवैदिक एवं संस्कृतविश्वविद्यालयः, उज्जैन
प्रोफेसरबिन्दाप्रसादमिश्रः, पूर्वकुलपतिः, सं.सं.वि.वि., वाराणसी।
प्रोफेसरकृष्णकान्तशर्मा, पूर्वसंकायप्रमुखः, सं.वि.ध.वि.संकायः, काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी।
प्रोफेसरसत्यप्रकाशशर्मा, पूर्वसंकायप्रमुखः, कलासंकायः, अलीगढ़मुस्लिमविश्वविद्यालयः, अलीगढ़।
प्रोफेसरलक्ष्मीशर्मा, पूर्वविभागाध्यक्षा, संस्कृतविभागः राजस्थान विश्वविद्यालयः, जयपुर।
प्रोफेसरवीरेन्द्रकुमारमिश्रः, पूर्वसंकायप्रमुखः, कलासंकायः, हिमाचलप्रदेशविश्वविद्यालयः, शिमला।
प्रोफेसरविन्ध्येश्वरीप्रसादमिश्रः, संकायप्रमुखः, सं.वि.ध.वि.संकायः, काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी।
Prof. Yogadhyan Ahuja, Metropolition State College, Denver co 80204 U.S.A.
Prof. Hisayoshi Miyamota, 6-1-15, Asakusa, Taito-Ku, Tokya, Japan
Dr. Sree Nivashan Sashidharan, Malaysia

परामर्शदातारः

प्रोफेसरराजीवरञ्जनसिंहः, पूर्वविभागाध्यक्षः, संस्कृतविद्याविभागः, सं.सं.वि.वि., वाराणसी।
प्रोफेसरजयप्रकाशनारायणद्विवेदी, पूर्वनिदेशकः द्वारकाधीशः वैदिक एवं संस्कृतअनुसंधानसंस्थानम्, द्वारका, गुजरात।
प्रोफेसरराजेश्वरप्रसादमिश्रः, प्राच्यविद्यासंकायाध्यक्षः, कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालयः, कुरुक्षेत्र।
प्रोफेसरविद्येश्वरझा, पूर्वसंस्कृतविभागाध्यक्षः, कामेश्वरसिंहदरभंगासंस्कृतविश्वविद्यालयः, दरभंगा (बिहार)।
प्रोफेसरलम्बोदरमिश्रः, पूर्वाचार्यः, वेदविभागः, ज.गु.रा.राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयः, जयपुर
प्रोफेसरउमाकान्तयादवः, इलाहाबादविश्वविद्यालयः, इलाहाबाद।
डॉ०जीतरामभट्टः, सचिवः दिल्लीसंस्कृतअकादमी, करोलबागोपनगरम्, नई दिल्ली।
प्रोफेसर डॉ०देवेन्द्रनाथपाण्डेयः, विभागाध्यक्षः संज्ञाहरणविभागः, आयुर्वेदसंकायः, का.हि.वि.वि., वाराणसी
प्रोफेसरमुरलीमनोहरपाठकः, संस्कृतविभागः, गोरखपुरविश्वविद्यालयः, गोरखपुर।
Prof. Kenneth Czysk, Head, Department of Asian Studies, University of Copenhagen, Dennmark
Prof. (Dr.) Mrs. Karin C. Presindaz, University of Vienna Austria
Prof. Ashok Aklujkar, Sanskrit & Indian Studies, Kanada
Prof. Nalini Balveer, Sanskrit & Indian Studies, Peris (France)
Prof. (Dr.) Sanjay Mishra, Social Sciences, Adigrat University Adigrat Tigray, Ethiopia PO Box 50

समीक्षकाः

प्रोफेसररसत्यप्रकाशशर्मा, पूर्वसङ्कायाध्यक्षः एवं विभागाध्यक्षः, संस्कृतविभागः, अलीगढ़मुस्लिमविश्वविद्यालयः, अलीगढ़।
प्रोफेसरमहेन्द्रपाण्डेयः, वेदविभागाध्यक्षः, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी।
प्रोफेसर(डॉ०) देवेन्द्रनाथपाण्डेयः, विभागाध्यक्षः, संज्ञाहरणविभागः, आयुर्वेदसंकायः, का.हि.वि.वि., वाराणसी।
प्रोफेसर अरविन्दकुमारजोशी, विभागाध्यक्षः, समाजशास्त्रविभागः, समाजविज्ञानसंकायः, का.हि.वि.वि., वाराणसी।
डॉ० आर०एस० जायसवाल, संज्ञाहरणविभागः, आयुर्वेदसंकायः, का.हि.वि.वि., वाराणसी।

सहयोगिनः

डॉ०उपेन्द्रकुमारत्रिपाठी, डॉ०सुनीलकात्यायनः, प्रो०महेन्द्रपाण्डेयः, डॉ०आर०के०जायसवाल, डॉ०पी०के०भारती, श्रीकिशनकुमारविश्वकर्मा

क्षेत्रीय प्रभारी

डॉ० रामकेश्वरतिवारी- देवरिया
डॉ० शैलेशकुमारपाण्डेयः- वाराणसी
डॉ० राकेशकुमारमिश्रः- उड़ीसा
डॉ० अजयकुमारमिश्रः- बंगाल
डॉ० सत्यवानः-दरभंगा (बिहार)
डॉ० दीपकशर्मा- जम्मू
डॉ०डी०एन०शर्मा- गुजरात
डॉ०विनयकुमारतिवारी- देवरिया
डॉ०ऋचामिश्रः- लखनऊ
डॉ० जगदम्बाप्रसादउपाध्यायः- जौनपुर

प्राप्तिस्थानम्

वेदविभागः

मुद्रकः

मयूरी प्रिंटिंग
मालवीय कुञ्ज, लंका, वाराणसी।

Scanned with ACE Scanner

Vol.: 16 आम्नायिकी ISSN No. : 2277-4270
(July– December 2019) ĀMNĀYIKI UGC List No. - 40768

विषयानुक्रमणिका

क्रमः	विषयः	लेखकाः	पृष्ठ सं०
१.	नादबिन्दूपनिषदि प्रणवविवेचनम्	प्रोफेसरकृष्णकान्तशर्मा, डॉ० आशीषमौद्गिलः	१-४
२.	वर्तमानपरिदृश्ये पातञ्जलयोगदर्शनस्य प्रासङ्गिकत्वमुपादेयत्वञ्च	प्रो० उमा रानी त्रिपाठी	५-९
३.	सांप्रतिककाले धर्मस्य श्रेयस्त्वम्	डॉली पण्डा	१०-१३
४.	पर्यावरणसंरक्षणस्य प्रासङ्गिकता	बलभद्रकर्णः	१४-१५
५.	प्राकृतिकापदाकारणानां ज्योतिषपर्यावरणभूगोलदृशा विमर्शः	अभिषेक गौतम	१६-१९
६.	कर्मकाण्डस्वरूपसमीक्षणम्	पुनीतकुमारझाः	२०-२४
७.	निरुक्तस्योपयोगिता	डॉ० मनी कुमार झा	२५-२७
८.	यमस्य स्वरूपम्	सिकेन्द्रमणि त्रिपाठी	२८-३१
९.	आचार्यजयमन्तमिश्रस्य वैदुष्यम्	गायत्री	३२-३४
१०.	शुक्लयजुर्वेदीय मंत्रों द्वारा कायचिकित्सा	प्रो० हरीश्वर दीक्षित	३५-३९
११.	वैदिक पादप विज्ञान के कतिपय सन्दर्भ	प्रो0 नीरज शर्मा	४०-४५
१२.	प्राचीन जातिगान	डॉ0 स्वरवन्दना शर्मा	४६-५०
१३.	अर्वाचीन संस्कृत के प्रमुख नाटकों में अर्थप्रकृति विमर्श	डॉ0 मधु सत्यदेव	५१-६१
१४.	मानव जीवन में सूर्य का महत्त्व	डॉ0 अर्चना पाण्डेय	६२-६७
१५.	आयुर्वेद एवं वाल्मीकीय रामायण	डॉ0 लक्ष्मी मिश्रा	६८-७७
१६.	रिसालः–ए–हक़नुमा और वेदान्तदर्शन में ब्रह्माण्ड विज्ञान दार्शनिक संदर्भ में	डॉ0 वाहिद नसरू	७८-९०
१७.	वैदिक स्वर प्रक्रिया	डॉ0 कर्तार चन्द शर्मा	९१-९७
१८.	तृत्सु शब्द का पारिभाषिक निहितार्थ	डॉ0 पुष्पा दीक्षित	९८-१००
१९.	हिन्दी नवगीत : एक विश्लेषण	डॉ0 अमरनाथ तिवारी	१०१-१०८
२०.	महात्मा गाँधी का राष्ट्रवाद	डॉ0 आलोक प्रताप सिंह विसेन	१०९-१११
२१.	आचार्य धर्मसूरी और उनका रचना-संसार	डॉ0 राकेश कुमार	११२-११८
२२.	वैदिक गृह्ययागों की प्रासङ्गिकता	डॉ0 जयेश मिश्र	११९-१२२
२३.	स्वतंत्रता के पश्चात् पंचायतराज-व्यवस्था	डॉ0 संजय पाठक	१२३-१२७
२४.	नागार्जुन (वैद्यनाथ मिश्र) का काव्य	डॉ0 सुमन सिंह	१२८-१३२
२५.	वैदिक साहित्य में हास्य	डॉ0 स्मिता शर्मा	१३३-१३७

Scanned with ACE Scanner

4

Vol.: 16 आम्नायिकी ISSN No. : 2277-4270
(July– December 2019) ĀMNĀYIKI UGC List No. - 40768

२६.	'कर्णसुन्दरी' नाटिका : एक दृष्टि	डॉ० करुणेश त्रिपाठी	१३८-१४१
२७.	भक्तिकालीन कवियों का उदय : तत्कालीन समय की माँग	डॉ० रीतू भटनागर	१४२-१४४
२८.	महाकवि भवभूति के नाट्य-साहित्य में प्रतिपादित कर्मफल सिद्धान्त	डॉ० सुषमा शुक्ला तिवारी	१४५-१४२
२९.	बच्चों के खाद्य-आदत का स्वास्थ्य पर प्रभाव	रीता मौर्या, डॉ० दीपा वर्मा	१५१-१५३
३०.	आजमगढ़ जनपंद के माध्यमिक विद्यालयों के अनुदानित शिक्षकों के कथा-शिक्षण व्यवहार का अध्ययन	चन्द्रशेखर प्रजापति डॉ० लालमणि प्रजापति	१५४-१५८
३१.	तैत्तिरीयोपनिष्द् में समावर्तन संस्कार की प्रासंगिकता	ऋतु कयाल	१५९-१६२
३२.	आचार्य रामजी उपाध्यायकृत अशोकविजयम् नाटक में विश्वमानवता	किरन यादव	१६३-१६६
३३.	कवि कर्णपूर के रचनाओं में सम्बन्ध तत्व : एक विश्लेषण	राम सागर	१६७-१७३
३४.	अभिज्ञानशाकुन्तल में प्रयुक्त छन्द	पंकज कुमार पाण्डेय	१७४-१७८
३५.	संज्ञाहरण के बारे में गलत धारणा	डॉ० डी. एन. पांडे	१७९-१८०
३६.	डिप्रेशन	डॉ० शुचि पाण्डे	१८१-१८३
३७.	Development of Information Technology : A new opportunity to local artists	Vagmita	१८४-१८६
३८.	Life Stress : Relation to Locus of Control Among Working Women's and Housewives	Dr. Rakesh Kumar Singh	१८७-१९१
३९.	Allegorical Expression and Shift of Social Systems in the Vedic Culture	Sanjay Mishra	१९२-२०१
४०.	Who is taking care of the caregiver?"	Dr. Vineet Mishra, Dr. D.N. Pande	२०२-२०४
४१.	Perspective of Clothing in Respect of Culture and Religion	Dr. Sabita	२०५-२१३
४२.	A clinical evaluation of Haritaki Kashaya and Madhu as Kawala in the management of Post Operative Sore Throat due to tracheal intubation under General Anaesthesia	Dr. Anil Dutt, Dr. Sneha pal Dr. Pradeep Awasthi	२१४-२२१
४३.	CONCEPT OF PURUṢA IN CARAKA SAṂHITĀ: A REVIEW	Dr. Dnyaneshwar Deshatwar	२२२-२२९
४४.	Correspondence of Human's Values in Indian Perspective	Satyam Shashank Sonkar	२३०-२३५
४५.	Sarojini Naidu : The Village Songs	Anand Kumar Thakur	२३६-२३९
४४.	पुस्तक समीक्षा - शल्य सुभाषितानि	प्रो० हरीश्वर दीक्षित	२४०
४५.	आम्नायिकी : शोध-निबन्ध प्रकाशन सम्बन्धी नियम एवं निर्देश	प्रधान सम्पादक	२४१
४६.	प्रधान सम्पादक : एक दृष्टि	प्रो० हरीश्वर दीक्षित	२४२

Scanned with ACE Scanner

5

Vol.-16 (July-December, 2019), Peer Reviewed ĀMNĀYIKĪ, ISSN No. 2277-4270, UGC List No. 40768

प्राचीन जातिगान

डॉ० स्वरवन्दना शर्मा*

'जाति' शब्द संस्कृत भाषा की जन् धातु में क्तिन् प्रत्यय जोड़ने से बनता है, जिसका अर्थ है जन्म होना या जन्म देना। जाति शब्द का दूसरा अर्थ है समानता पर आधारित समूह, जिसके लिये जातिवाचक संज्ञा शब्द का प्रयोग किया जाता है। ऐसी वस्तुओं का समूह जिसमें रंग-रूप-कार्य आदि किसी प्रकार की समानता हो, जैसे सजीव और निर्जीव पदार्थ।

संगीत में जाति शब्द तीन तरह से समझा जाता है – राग की जाति, ताल की जाति और जातिगान।

1. **राग की जाति-** स्वरों की संख्या पर आधारित राग-जाति के तीन मुख्य प्रकार हैं –
   - (i) पाँच स्वर – औडव जाति (राग भूपाली)
   - (ii) छः स्वर - षाडव जाति (राग मारवा)
   - (iii) सात स्वर – सम्पूर्ण जाति (राग यमन)
2. **ताल की जाति-** मात्रा संख्या पर आधारित, इसका विशेष प्रयोग कर्नाटक संगीत पद्धति में दिखाई देता है।
   - (i) तीन मात्रा – तिस्र जाति
   - (ii) चार मात्रा – चतस्र जाति
   - (iii) पाँच मात्रा – खंड जाति
   - (iv) सात मात्रा – मिश्र जाति
   - (v) नौ मात्रा - संकीर्ण जाति
3. **प्राचीन जातिगान –**

जो स्थान आज भारतीय संगीत में राग का है, वही स्थान करीब डेढ़ हजार वर्ष पहले जाति का था। वर्तमान रागसंगीत के मूलतत्त्व जाति में दिखाई देते हैं, इसलिये 'जाति' को रागों की माता भी कहते हैं।

जातिगान ही विकास के क्रम में आगे चलकर राग के रूप में दिखाई देता है। भरत के नाट्यशास्त्र में मूर्च्छना के बाद जाति का वर्णन मिलता है। भरत ने जाति की परिभाषा तो नहीं दी है पर नाट्यशास्त्र के टीकाकार अभिनवगुप्त ने जाति के विषय में इस प्रकार समझाया है - **स्वरा एव विशिष्टा सन्निवेशभाजो रक्तिम् अदृष्टाभ्युदयञ्च जनयन्तो जातिरित्युक्तः। × × जातिलक्षणेन दशकेन भवति सन्निवेशः।** अर्थात् दस लक्षणों से बनने वाले विशेष स्वरसन्निवेश को जाति कहते हैं, जो रंजकता और अदृष्ट अभ्युदय देता है।

बृहद्देशी नामक ग्रंथ में मतंग ने जाति के विषय में कहा है -

1. **श्रुति - ग्रहस्वरादिसमूहाज्जायन्त इति जातयः** अर्थात् श्रुति और ग्रहस्वर आदि के समूह से जन्म लेने के कारण जाति कही जाती है।

---

* ऐसासिएट प्रोफेसर, संगीत (गायन), वसंत कन्या महाविद्यालय, वाराणसी।

Scanned with ACE Scanner

2. **यस्माज्जायते रसप्रतीतिरारभ्यते इति जातयः** अर्थात् जिससे रस की प्रतीति (जानकारी) की उत्पत्ति हो उसे जाति कहते हैं।

3. **सकलरागादेर्जन्महेतुत्वात् जातयः** अर्थात् सभी रागों के जन्म का कारण होने से जाति कहलाती है और

4. **यथा नराणां ब्राह्मणत्वादयो जातयः** अर्थात् जैसे मनुष्यों में ब्राह्मण आदि जातियाँ होती हैं वैसे ही जाति सामान्य अर्थ में जानी जाती है।

अभिनवगुप्त ने जिन दस लक्षणों की बात कही है वे भरत-नाट्यशास्त्र में निम्नलिखित रूप में उल्लिखित हैं -

ग्रहांशौ तारमन्द्रौ च न्यासोऽपन्यास एव च ।
अल्पत्वं च बहुत्वं च षाडवौडुविते तथा ॥

ये सब दो-दो की जोड़ी में है। जैसे- ग्रह-अंश, तार-मन्द्र, न्यास-अपन्यास, अल्पत्व-बहुत्व और षाडव-औडव।

1,2. **ग्रह- अंश-** जिस स्वर से जातिगान का प्रारंभ होता है, वह ग्रह है तथा जिस स्वर में जाति की रंजकता निर्भर हो, जो राग और रस की उत्पत्ति का मुख्य आधार हो, गाते समय जिस स्वर से पाँच स्वर नीचे और पाँच स्वर ऊपर तक विस्तार हो, जो अन्य स्वरों से घिरा हो, वह अंश स्वर है।

3,4. **तार-मन्द्र –** अंश या न्यास या अपन्यास स्वर से चार, पाँच या सात स्वर ऊपर जाने की तार सीमा और उसी प्रकार चार, पाँच या सात स्वर नीचे जाने की मन्द्र सीमा है।

5,6. **न्यास-अपन्यास-** जहाँ गान समाप्त हो वह न्यास, जहाँ गान के बीच में ठहराव हो वह अपन्यास स्वर है।

7,8. **अल्पत्व-बहुत्व –** अल्पत्व के दो प्रकार हैं - पहला लंघन (लाँघना या छोड़ देना) और दूसरा अनभ्यास (बार-बार न दुहराना)। बहुत्व के भी दो प्रकार हैं - अलंघन (न छोड़ना) और अभ्यास (बार-बार दोहराना)।

9,10. **षाडव-औडव –** सप्तक के सात स्वरों का प्रयोग संपूर्ण होता है, उनमें से एक छोड़कर छह स्वरों का प्रयोग षाडव और दो छोड़ कर पाँच स्वर का प्रयोग औडव कहे जाते हैं।

इन लक्षणों को देखने से समझ में आता है कि आज हमारे संगीत में राग का रूप तय करने के लिये जिन-जिन नियमों को माना जाता हैं वे सब इन्हीं पर आधारित हैं। जैसे राग को प्रारंभ करने वाला स्वर, राग का प्रमुख स्वर, राग के विस्तार के लिये तार या मन्द्र स्वरों का प्रयोग, राग के स्वरों का कम या अधिक प्रयोग और राग के स्वरों की संख्या। अतः जाति को रागों की माता कहना सही है।

उपरिलिखित दस लक्षणों के साथ रंजकता और अभ्युदय (यश-प्राप्ति और आर्थिक लाभ) जो जाति के विषय में कहे हैं वह राग के साथ भी जुड़े हुए हैं, किन्तु अदृष्ट के रूप में जिस पारलौकिक उत्कर्ष की चर्चा है वह जातिगान को अत्यंत विशिष्ट श्रेणी में पहुँचा देता है।

Scanned with ACE Scanner

सामान्यतः गाना शुरू करने के लिये मध्य सा का उच्चारण करते हैं, पर राग गाते समय सा के अतिरिक्त अन्य स्वर भी प्रारंभिक स्वर (ग्रहस्वर) बनते हैं जैसे यमन/बिहाग/ पूरियाकल्याण आदि में मन्द्र नि, वसंत में म ध सां करते हुए तीव्र म आदि। जाति का सबसे प्रमुख स्वर अंश है, जिसके समान हम राग का वादी स्वर समझते हैं जैसे भूपाली में ग।

जाति के प्रसंग में अंश या न्यास स्वर से 4/5 स्वर ऊपर जाना तार-सीमा और उसी से 4/5 स्वर नीचे जाना मंद्र-सीमा बताई गई है। आज राग के प्रसंग में अंश या वादी स्वर से तो नहीं पर तार और मन्द्र सप्तकों से जुड़े शब्द बन गये हैं। कुछ राग मन्द्र-सप्तक प्रधान और कुछ तार-सप्तक प्रधान हैं यह संगीत का हर विद्यार्थी समझ सकता है उदाहरणार्थ- दरबारीकानड़ा मन्द्र-सप्तक प्रधान और अड़ाना तार-सप्तक प्रधान राग है।

राग के बीच में ठहराव के अलग-अलग स्वर उस राग को उभारते हैं। देशकार में पंचम पर ठहराव बहुत महत्त्व का है। प्रायः आज राग का आखिरी ठहराव मध्य सा पर करते हैं फिर भी कुछ रागों में उस सा के बाद भी कुछ छूटा हुआ लगता है। जैसे आसावरी/जौनपुरी में सा के बाद 'रे म प - ध़ म प - ' करने पर ही आराम मिलता है। यह न्यास का उदाहरण है।

अल्पत्व-बहुत्व के उदाहरण अनेक हैं। बिहाग के अवरोह में ध और रे का अल्पत्व सब जानते हैं। भूपाली, बिहाग, गौड़सारंग में ग का बहुत्व भी सर्वपरिचित है।

षाडव- औडव के उदाहरण भरे पड़े हैं हमारे राग-संगीत में। संपूर्ण के रूप में यमन, भैरव आदि; षाडव के रूप में मारवा, पूरिया आदि तथा औडव के रूप में भूपाली, मालकौंस आदि भी सब भलीप्रकार जानते हैं। इन उदाहरणों से अच्छी तरह समझा जा सकता है कि प्राचीन जातिगान को रागों की माता कहने की क्या सार्थकता है। यहाँ यह अवश्य स्मरणीय है कि इसी कारण पं0 ओम्कारनाथ ठाकुर ने अपनी ग्रंथमाला 'संगीतांजलि' में रागवर्णन के लिये जाति-लक्षण वाले शब्दों का – ग्रह-अंश, न्यास-उपन्यास का – प्रयोग किया है।

जाति के भेद –

जाति के दो मुख्य भेद हैं - शुद्धा और विकृता।

1. **शुद्धा जाति –** सप्तक के सात स्वरों के नाम वाली सात शुद्धा जातियाँ हैं। इनमें से षाड्जी, आर्षमी, धैवती और नैषादी चार जातियाँ षड्ज ग्राम की और गांधारी, मध्यमा और पंचमी मध्यम ग्राम की हैं।
   शुद्धा जाति के दो लक्षण है-
   (i) अन्यून स्वरा- जिसमें कोई स्वर कम न हो, अर्थात् सातों स्वर वाली।
   (ii) स्व-स्वरांश-ग्रह-न्यासा- जिसमें जाति के अपने नाम वाला स्वर ही ग्रह, अंश, न्यास हो।
2. **विकृता जातियाँ –** शुद्धा जाति के स्वरों की संख्या बदलने से अर्थात् 7 के बदले 6 या 5 स्वरों का प्रयोग करने से और नामस्वर के ग्रह और अंश होने का नियम बदलने से विकृता जातियाँ बनती हैं। याद यह रखना है कि न्यास स्वर वाला नियम कभी नहीं बदलता। संसर्गजा विकृता जातियाँ 11 बताई गई हैं। 7 शुद्धा और 11 विकृता मिलाकर कुल 18 जातियाँ बनती हैं।

Scanned with ACE Scanner

षड्जग्राम की जातियों के स्वर-स्वरूप –

1. **षाड्जी -** षड्जग्राम का षड्ज ही इसमें ग्रह, अंश, न्यास होने से षड्ज ग्राम की मूलस्वरावली ही षाड्जीजाति का रूप है जो करीब-करीब वर्तमान काफी जैसा है-

- - - सा - - रे - ग - - - म - - - प - - ध - नि
वर्तमान स्वर – सा रे ग म प ध नि

2. **आर्षभी -** षड्जग्राम का ऋषभ इसमें न्यास तथा ग्रह, अंश होने के कारण इसका स्वरूप वर्तमान भैरवी जैसा है –

- - रे – ग - - - म - - - प - - ध – नि - - - सा
वर्तमान स्वर- सा रे ग म प ध नि

3. **धैवती-** षड्जग्राम का धैवत न्यास स्वर होने के कारण इसका जो स्वररूप दिखाई देता है, वह अपने आप में अनोखा मिश्र राग लगता है क्योंकि आज प्रचलित रागों में ऐसा रूप नहीं दिखता है-

- - ध - नि - - - सा - - रे – ग - - - म - - - प
वर्तमान स्वर- सा रे ग म मं ध नि

इसका 'सा रे ग म' भैरवी का, 'म मं ध' ललित अथवा 'सा रे ग मं' तोड़ी, 'म मं ध' ललित और 'ध नि' पुनः भैरवी प्रतीत होता है।

4. **नैषादी-** षड्जग्राम का निषाद न्यास स्वर होने से इसका स्वररूप वर्तमान शुद्ध स्वर सप्तक वाला बनता है जिसे हम बिलावल के रूप में पहचानते हैं -

- नि - - - सा - - रे – ग - - - म - - - प - - ध
वर्तमान स्वर- सा रे ग म प ध नि

मध्यमग्राम की जातियों के स्वर-स्वरूप -

5. **गान्धारी –** मध्यमग्राम का गान्धार इसका न्यास स्वर है, इसके स्वर आज के कल्याण (यमन) के स्वर हैं –

- ग - - -म - - प - - - ध - नि - - - सा - -रे
वर्तमान स्वर- सा रे ग मं प ध नि

6. **मध्यमा-** मध्यमग्राम का मध्यम न्यासस्वर होने से इसका स्वररूप वर्तमान खमाज जैसा होता है-

- - - म - - प - - - ध - नि - - - सा - - रे - ग
वर्तमान स्वर- सा रे ग म प ध नि

भरत ने मध्यमग्राम की मध्यमा और पंचमी जातियों में स्वर-साधारण प्रयोग अर्थात् दोनों विकृत स्वर अंतर गांधार और काकली निषाद का प्रयोग करने को कहा है। स्वर-साधारण के साथ मध्यमा जाति के स्वररूप में आज के दोनों म और दोनों नि आ जाते हैं, इसलिये इसमें ऐसे राग समा जाते हैं जिनमें दो म और दो नि का प्रयोग होता है -

- अं - म - - प - - - ध - नि - का - सा - - रे - ग (- अं - म)
गा　　　　　　　　　　नि　　　　　　गा

वर्तमान स्वर-　ऩि सा रे ग म मं प ध नि̱ (- नि - सां)

7. पंचमी- मध्यमग्राम का पंचम इसमें न्यास स्वर है और इसमें भी स्वर-साधारण (अंतर गांधार और काकली निषाद) के प्रयोग के कारण वर्तमान दोनों ग, दोनों ध और कोमल नि वाला स्वर समूह मिलता है-

- - प - - - ध – नि - का - सा - - रे - ग - अं - म
नि　　　　　　गा

वर्तमान स्वर-　सा रे ग̱ ग म प ध̱ ध नि̱

इसमें आसावरी और कानड़ा अंग के राग आ सकते हैं।

इन 7 शुद्धा जातियों के अतिरिक्त 11 संसर्गजा जातियों के नाम इस प्रकार हैं–

क्र.सं.	संसर्गजा जाति का नाम	ग्राम	जाति-संसर्ग	वर्तमान रागों की समानता
1.	षड्जकैशिकी	षड्ज	षाड्जी, गांधारी	काफी, कल्याण
2.	षड्जोदीच्यवा	षड्ज	षाड्जी, गांधारी, धैवती	काफी, कल्याण, तोड़ी, भैरवी ललित
3.	षड्जमध्यमा	षड्ज	षाड्जी, मध्यमा	काफी, खमाज
4.	गान्धारोदीच्यवा	मध्यम	षाड्जी, गांधारी, धैवती, मध्यमा	काफी, कल्याण, तोड़ी, भैरवी, ललित, खमाज
5.	मध्यमोदीच्यवा	मध्यम	गांधारी, पंचमी, धैवती, मध्यमा	कल्याण, आसावरी, तोड़ी, भैरवी, ललित, खमाज
6.	रक्तगान्धारी	मध्यम	गांधारी, पंचमी, नैषादी, मध्यमा	कल्याण, आसावरी, बिलावल खमाज
7.	आन्ध्री	मध्यम	गांधारी, षाड्जी	कल्याण, काफी
8.	नन्दयन्ती	मध्यम	गांधारी, पंचमी, आर्षमी	कल्याण, आसावरी, भैरवी
9.	गान्धारपंचमी	मध्यम	गांधारी, पंचमी	कल्याण, आसावरी
10.	कार्मारवी	मध्यम	नैषादी, आर्षभी, पंचमी	बिलावल, भैरवी, आसावरी
11.	कैशिकी	मध्यम	षाड्जी, गांधारी, मध्यमा, पंचमी, नैषादी	काफी, कल्याण, खमाज, आसावरी, बिलावल

इस प्रकार जाति के लक्षणों में वर्तमान रागों के नियम तथा शुद्ध तथा संसर्गजा जातियों में भिन्न-भिन्न स्वरावली तथा स्वरसमुदाय मिलने के कारण अलग-अलग रागों को मिलाने के लिये भी आधार मिलता है।

अतः यह जानना सुखद है कि प्राचीन जातिगान न केवल हमारी सांगीतिक विचार की परंपरा का अत्यंत समृद्ध दृष्टिकोण सामने लाता है अपितु साक्षात् प्रयोग की विविधताओं को व्यवस्था देने का मार्गदर्शन भी करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. संगीतांजलि, भाग-6, पं0 ओम्कारनाथ ठाकुर, वाराणसी, 1962.
2. प्रणवभारती, द्वितीय संस्करण, पं0 ओम्कारनाथ ठाकुर, पं0 ओ0ठा0 मेमोरियल एस्टेट, मुंबई, 1997.
3. संगीत : जिज्ञासा और समाधान, डॉ0 तेजसिंह टाक, बेकराँ आलमी फाउण्डेशन, लखनऊ, 2001.

O

Scanned with ACE Scanner

1
2-9-3
(1-7) 1

A Debate on Electoral Reforms in India : An Analysis

Not in assessment period.

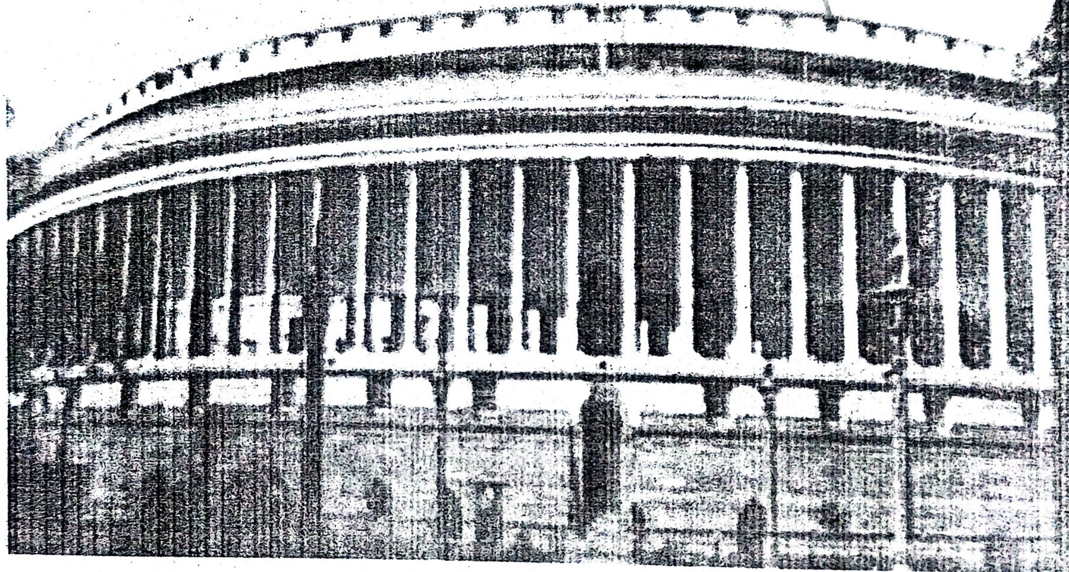

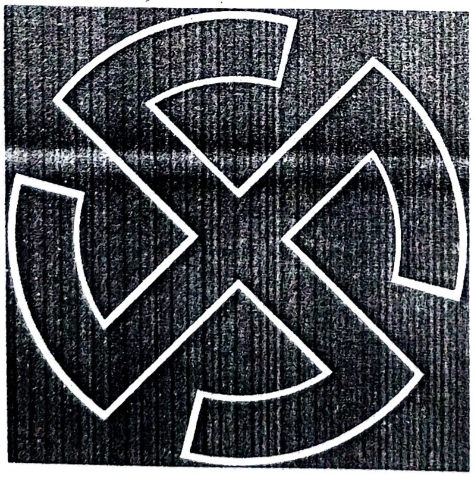

भारत निर्वाचन आयोग
Election Commission of India

Editor-
Dr. Ashish Kumar Sonker

Scanned with ACE Scanner

About the Book

In the last few decades India's electoral system has been changed and improved a lot. This is visible in several areas like legal, institutional, democratic etc.

This book is based on selected lectures and articles of distinguished academicians and personalities who participated in the ICSSR sponsored national seminar on the topic " *A Debate on electoral Reforms in India*", held on 17th-18th September, 2018. The Seminar focused on the attempts made to improve the election system in India. India is densely populated, democratic country. However, a large population is not participating or playing an active role in the election system. The articles and lectures in this book dwell issues like behavioral pattern of the political parties, internal democracy within parties role of media in election, transparency and financial accountability in state funding criminalization of politics and methods of election.

The articles in the book diagnose the ailment of electoral system in India and suggest some conceptive measures. The book may be useful to all those concerned citizens who strive to understand electoral system in India and the changes it requires.

ISBN : 978-93-87199-64-4

9 789387 199644

ISBN : 978-93-87199-64-4

M.R.P. Rs. : 600.00

Scanned with ACE Scanner

A Debate on Electoral Reforms in India : An Analysis

(Based on National Seminar Sponsored by ICSSR)

Edited by **Dr. Ashish Kumar Sonker**

Patron **Prof. Rachna Srivastava**
Principal, Vasant Kanya Mahavidyalaya

2020

Kala Prakashan

B. 33/33 A-1, New Saket Colony,
B.H.U. Varanasi 221005

Scanned with ACE Scanner

Contents

अध्याय	शीर्षक	पृष्ठ सं0
	प्राक्कथन	v-ix
	Principal's Note	x-xiv
1.	प्रस्तावना– भारत में चुनाव सुधार : एक विश्लेषण *डॉ0 आशीष कुमार सोनकर*	17-27
2.	भारत में निर्वाचन सुधार *श्री ओम प्रकाश रावत*	28-32
3.	भारतीय चुनाव में मतदाता व्यवहार एवं उसके निर्धारक तत्त्व : एक विवेचन *डॉ0 मनोज कुमार सिंह*	33-39
4.	चुनाव सुधार में विधि आयोग की भूमिका (2015 की रिपोर्ट) *डॉ0 सरोज उपाध्याय*	40-45
5.	भारत में चुनाव सुधार और गठबन्धन की सरकारें *शैलेश कुमार राम*	46-54
6.	निर्वाचन–लोकतन्त्र की आधार शिला *डॉ0 अर्चना सिंह*	55-63
7.	वाराणसी जनपद के आम चुनाव (सन् 2009 तथा 2014) में युवा दृष्टिकोण का एक तुलनात्मक अध्ययन *उमेश कुमार राय व डॉ0 अल्का रानी गुप्ता*	64-71
8.	राजनीतिक दल में आंतरिक लोकतंत्र *ज्योत्सना कुमारी*	72-75
9.	"वर्तमान परिदृश्य में चुनाव प्रणाली में समस्याएं एवं समाधान" *डॉ0 पूनम राय*	76-79
10.	भारतीय लोकतंत्र एवं चुनाव सुधार : एक विवेचनात्मक अध्ययन *सन्तलाल भारती व पूजा सिंह*	80-86

Scanned with ACE Scanner

11. मतदाता जागरुकता गीत 87-88
डॉ० स्वरवंदना शर्मा

12. मतदान की शक्ति (स्वरचित गीत) 89-90
डॉ० मीनू पाठक

13. **ELECTORAL REFORMS : Significance, Scope and Necessity** 91-104
Dr. Subhash C. Kashyap

14. **One Nation One Election (Simultaneous Elections)** 105-125
Prof. Sonali Singh

15. **Confused Public Choice in Representative Democracy** 126-138
Dr. Indu Upadhyay

16. **Indian Political Parties' Democratic Claims and Intra Party Structure and Culture: Understanding the Paradox** 139-151
Dr. Priti Singh

17. **Internal Democracy in Political Parties & Women's Participation in India: A Study** 152-166
Dr. Manisha Mishra

18. **Transparency and Financial Accountability in State Funding** 167-179
Dr. Vijay Kumar

19. **Criminalization of Politics in India** 180-192
Dr. Akhilesh Kumar Rai

Scanned with ACE Scanner

6

अध्याय—11

मतदाता जागरूकता गीत

डॉ० स्वरवन्दना शर्मा*

मतदान केन्द्र चलो गुइयाँ
डाल आवें वोट री।
डाल आवें वोट गुइयाँ
डाल आवें वोट री।
आधार–वोटर कार्ड बना कर
रख पूरी पहचान री।
संग–संग मिल करके जाओ
सभी अठारह पूरी।।1।।
सुबह–सवेरे कलेवा करके
लाइन में लग जाओ री।
वोट डाल, उंगली छपवा फिर
लौट के छान कचौड़ी।।2।।
भाषण हर नेता के सुनकर
सही गलत पहचान री।
अपने माफिक जो पाओ
उसे डालना वोट री।।3।।
कोई पैदल, कोई साइकिल लेकर,
कोई जीप चढ़ो री।
अपने देश के संविधान में
सब इसकी अधिकारी।।4।।

* एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत (गायन), वसन्त कन्या महाविद्यालय, वाराणसी

Scanned with ACE Scanner

दादा नाना ताऊ मामा

सबका ध्यान रखो री।

दादी नानी ताई मामी

ना छूटे महतारी।।5।।

टिप्पणी– *प्रस्तुत गीत काशी की संगीत परम्परा के प्रसिद्ध गीत 'कन्हैया घर चलो गुइयाँ, आज खेलें होरी' पर आधारित है।*

•

Scanned with ACE Scanner

1
2-9-2
(1—9)

Not in assessment period

Vol.: 16 (July– December 2019)

ISSN No. : 2277-4270
UGC List No. - 40768

आम्नायिकी

षोडशोऽङ्कः, जुलाई-दिसम्बर, २०१९
षाण्मासिकी अन्ताराष्ट्रिया मूल्याङ्कितशोधपत्रिका
(विश्वविद्यालयानुदानायोग-नईदिल्लीद्वारा अनुमोदिता)

प्रधानसंम्पादकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः

सहसम्पादकाः
प्रोफेसरपतञ्जलिमिश्रः डॉ० उदयप्रतापभारती, डॉ० सरोजकुमारपाढी,
डॉ० पुष्पादीक्षितः, डॉ० रमाकान्तपाण्डेयः, प्रो० (डॉ.) देवेन्द्रनाथपाण्डेयः,
डॉ० राकेशकुमारमिश्रः, डॉ० आलोकप्रतापसिंहविसेनः

प्रकाशकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः
वेदविभागः
संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसङ्कायः
काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी-२२१००५

Scanned with ACE Scanner

प्रधानसंरक्षकः

कुलपतिः, काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः

संरक्षकमण्डलम्

प्रोफेसरराजेन्द्रमिश्रः, पूर्वकुलपतिः, सं.सं.वि.वि., वाराणसी।
प्रोफेसरराधावल्लभत्रिपाठी, पूर्वकुलपतिः, राष्ट्रीयसंस्कृतसस्थानम्, नईदिल्ली।
प्रोफेसर मिथिला प्रसाद त्रिपाठी, पूर्व कुलपतिः, पाणिनीवैदिक एवं संस्कृतविश्वविद्यालयः, उज्जैन
प्रोफेसरबिन्दाप्रसादमिश्रः, पूर्वकुलपतिः, सं.सं.वि.वि., वाराणसी।
प्रोफेसरकृष्णकान्तशर्मा, पूर्वसंकायप्रमुखः, सं.वि.ध.वि.संकायः, काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी।
प्रोफेसरसत्यप्रकाशशर्मा, पूर्वसंकायप्रमुखः, कलासंकायः, अलीगढ़मुस्लिमविश्वविद्यालयः, अलीगढ़।
प्रोफेसरलक्ष्मीशर्मा, पूर्वविभागाध्यक्षा, संस्कृतविभागः राजस्थान विश्वविद्यालयः, जयपुर।
प्रोफेसरवीरेन्द्रकुमारमिश्रः, पूर्वसंकायप्रमुखः, कलासंकायः, हिमाचलप्रदेशविश्वविद्यालयः, शिमला।
प्रोफेसरविन्ध्येश्वरीप्रसादमिश्रः, संकायप्रमुखः, सं.वि.ध.वि.संकायः, काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी।
Prof. Yogadhyan Ahuja, Metropolition State College, Denver co 80204 U.S.A.
Prof. Hisayoshi Miyamota, 6-1-15, Asakusa, Taito-Ku, Tokya, Japan
Dr. Sree Nivashan Sashidharan, Malaysia

परामर्शदातारः

प्रोफेसरराजीवरञ्जनसिंहः, पूर्वविभागाध्यक्षः, संस्कृतविद्याविभागः, सं.सं.वि.वि., वाराणसी।
प्रोफेसरजयप्रकाशनारायणद्विवेदी, पूर्वनिदेशकः द्वारकाधीशः वैदिक एवं संस्कृतअनुसंधानसंस्थानम्, द्वारका, गुजरात।
प्रोफेसरराजेश्वरप्रसादमिश्रः, प्राच्यविद्यासंकायाध्यक्षः, कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालयः, कुरुक्षेत्र।
प्रोफेसरविद्येश्वरझा, पूर्वसंस्कृतविभागाध्यक्षः, कामेश्वरसिंहदरभंगासंस्कृतविश्वविद्यालयः, दरभंगा (बिहार)।
प्रोफेसरलम्बोदरमिश्रः, पूर्वाचार्यः, वेदविभागः, ज.गु.रा.राजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयः, जयपुर
प्रोफेसरउमाकान्तयादवः, इलाहाबादविश्वविद्यालयः, इलाहाबाद।
डॉ०जीतरामभट्टः, सचिवः दिल्लीसंस्कृतअकादमी, करोलबागोपनगरम्, नई दिल्ली।
प्रोफेसर डॉ०देवेन्द्रनाथपाण्डेयः, विभागाध्यक्षः संज्ञाहरणविभागः, आयुर्वेदसंकायः, का.हि.वि.वि., वाराणसी
प्रोफेसरमुरलीमनोहरपाठकः, संस्कृतविभागः, गोरखपुरविश्वविद्यालयः, गोरखपुर।
Prof. Kenneth Czysk, Head, Department of Asian Studies, University of Copenhagen, Dennmark
Prof. (Dr.) Mrs. Karin C. Presindaz, University of Vienna Austria
Prof. Ashok Aklujkar, Sanskrit & Indian Studies, Kanada
Prof. Nalini Balveer, Sanskrit & Indian Studies, Peris (France)
Prof. (Dr.) Sanjay Mishra, Social Sciences, Adigrat University Adigrat Tigray, Ethiopia PO Box 50

समीक्षकाः

प्रोफेसररसत्यप्रकाशशर्मा, पूर्वसङ्कायाध्यक्षः एवं विभागाध्यक्षः, संस्कृतविभागः, अलीगढ़मुस्लिमविश्वविद्यालयः, अलीगढ़।
प्रोफेसरमहेन्द्रपाण्डेयः, वेदविभागाध्यक्षः, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी।
प्रोफेसर(डॉ०) देवेन्द्रनाथपाण्डेयः, विभागाध्यक्षः, संज्ञाहरणविभागः, आयुर्वेदसंकायः, का.हि.वि.वि., वाराणसी।
प्रोफेसर अरविन्दकुमारजोशी, विभागाध्यक्षः, समाजशास्त्रविभागः, समाजविज्ञानसंकायः, का.हि.वि.वि., वाराणसी।
डॉ० आर०एस० जायसवाल, संज्ञाहरणविभागः, आयुर्वेदसंकायः, का.हि.वि.वि., वाराणसी।

सहयोगिनः

डॉ०उपेन्द्रकुमारत्रिपाठी, डॉ०सुनीलकात्यायनः, प्रो०महेन्द्रपाण्डेयः, डॉ०आर०के०जायसवाल, डॉ०पी०के०भारती, श्रीकिशनकुमारविश्वकर्मा

क्षेत्रीय प्रभारी

डॉ० रामकेश्वरतिवारी- देवरिया
डॉ० शैलेशकुमारपाण्डेयः- वाराणसी
डॉ० राकेशकुमारमिश्रः- उड़ीसा
डॉ० अजयकुमारमिश्रः- बंगाल
डॉ० सत्यवानः-दरभंगा (बिहार)
डॉ० दीपकशर्मा- जम्मू
डॉ०डी०एन०शर्मा- गुजरात
डॉ०विनयकुमारतिवारी- देवरिया
डॉ०ऋचामिश्रः- लखनऊ
डॉ० जगदम्बाप्रसादउपाध्यायः- जौनपुर

प्राप्तिस्थानम्

वेदविभागः

मुद्रकः

मयूरी प्रिंटिंग
मालवीय कुञ्ज, लंका, वाराणसी।

Scanned with ACE Scanner

Vol.: 16
(July– December 2019)

आम्नायिकी
ĀMNĀYIKI

ISSN No. : 2277-4270
UGC List No. - 40768

विषयानुक्रमणिका

क्रमः	विषयः	लेखकाः	पृष्ठ सं०
१.	नादबिन्दूपनिषदि प्रणवविवेचनम्	प्रोफेसरकृष्णकान्तशर्मा, डॉ० आशीषमौद्गिलः	१-४
२.	वर्तमानपरिदृश्ये पातञ्जलयोगदर्शनस्य प्रासङ्गिकत्वमुपादेयत्वञ्च	प्रो० उमा रानी त्रिपाठी	५-९
३.	सांप्रतिककाले धर्मस्य श्रेयस्त्वम्	डॉली पण्डा	१०-१३
४.	पर्यावरणसंरक्षणस्य प्रासङ्गिकता	बलभद्रकर्णः	१४-१५
५.	प्राकृतिकापदाकारणानां ज्योतिषपर्यावरणभूगोलदृशा विमर्शः	अभिषेक गौतम	१६-१९
६.	कर्मकाण्डस्वरूपसमीक्षणम्	पुनीतकुमारझाः	२०-२४
७.	निरुक्तस्योपयोगिता	डॉ० मनी कुमार झा	२५-२७
८.	यमस्य स्वरूपम्	सिकेन्द्रमणि त्रिपाठी	२८-३१
९.	आचार्यजयमन्तमिश्रस्य वैदुष्यम्	गायत्री	३२-३४
१०.	शुक्लयजुर्वेदीय मंत्रों द्वारा कायचिकित्सा	प्रो० हरीश्वर दीक्षित	३५-३९
११.	वैदिक पादप विज्ञान के कतिपय सन्दर्भ	प्रो0 नीरज शर्मा	४०-४५
१२.	प्राचीन जातिगान	डॉ0 स्वरवन्दना शर्मा	४६-५०
१३.	अर्वाचीन संस्कृत के प्रमुख नाटकों में अर्थप्रकृति विमर्श	डॉ0 मधु सत्यदेव	५१-६१
१४.	मानव जीवन में सूर्य का महत्त्व	डॉ0 अर्चना पाण्डेय	६२-६७
१५.	आयुर्वेद एवं वाल्मीकीय रामायण	डॉ0 लक्ष्मी मिश्रा	६८-७७
१६.	रिसालः–ए–हक़्नुमा और वेदान्तदर्शन में ब्रह्माण्ड विज्ञान दार्शनिक संदर्भ में	डॉ0 वाहिद नसरू	७८-९०
१७.	वैदिक स्वर प्रक्रिया	डॉ0 कर्तार चन्द शर्मा	९१-९७
१८.	तृत्सु शब्द का पारिभाषिक निहितार्थ	डॉ0 पुष्पा दीक्षित	९८-१००
१९.	हिन्दी नवगीत : एक विश्लेषण	डॉ0 अमरनाथ तिवारी	१०१-१०८
२०.	महात्मा गाँधी का राष्ट्रवाद	डॉ0 आलोक प्रताप सिंह विसेन	१०९-१११
२१.	आचार्य धर्मसूरी और उनका रचना-संसार	डॉ0 राकेश कुमार	११२-११८
२२.	वैदिक गृह्ययागों की प्रासङ्गिकता	डॉ0 जयेश मिश्र	११९-१२२
२३.	स्वतंत्रता के पश्चात् पंचायतराज-व्यवस्था	डॉ0 संजय पाठक	१२३-१२७
२४.	नागार्जुन (वैद्यनाथ मिश्र) का काव्य	डॉ0 सुमन सिंह	१२८-१३२
२५.	वैदिक साहित्य में हास्य	डॉ0 स्मिता शर्मा	१३३-१३७

Scanned with ACE Scanner

Vol.: 16 (July– December 2019) आम्नायिकी ĀMNĀYIKI ISSN No. : 2277-4270 UGC List No. - 40768

२६.	'कर्णसुन्दरी' नाटिका : एक दृष्टि	डॉ० करुणेश त्रिपाठी	१३८-१४१
२७.	भक्तिकालीन कवियों का उदय : तत्कालीन समय की माँग	डॉ० रीतू भटनागर	१४२-१४४
२८.	महाकवि भवभूति के नाट्य-साहित्य में प्रतिपादित कर्मफल सिद्धान्त	डॉ० सुषमा शुक्ला तिवारी	१४५-१४२
२९.	बच्चों के खाद्य-आदत का स्वास्थ्य पर प्रभाव	रीता मौर्या, डॉ० दीपा वर्मा	१५१-१५३
३०.	आजमगढ़ जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के अनुदानित शिक्षकों के कथा-शिक्षण व्यवहार का अध्ययन	चन्द्रशेखर प्रजापति डॉ० लालमणि प्रजापति	१५४-१५८
३१.	तैत्तिरीयोपनिष्द् में समावर्तन संस्कार की प्रासंगिकता	ऋतु कयाल	१५९-१६२
३२.	आचार्य रामजी उपाध्यायकृत अशोकविजयम् नाटक में विश्वमानवता	किरन यादव	१६३-१६६
३३.	कवि कर्णपूर के रचनाओं में सम्बन्ध तत्व : एक विश्लेषण	राम सागर	१६७-१७३
३४.	अभिज्ञानशाकुन्तल में प्रयुक्त छन्द	पंकज कुमार पाण्डेय	१७४-१७८
३५.	संज्ञाहरण के बारे में गलत धारणा	डॉ० डी. एन. पांडे	१७९-१८०
३६.	डिप्रेशन	डॉ० शुचि पाण्डे	१८१-१८३
३७.	Development of Information Technology : A new opportunity to local artists	Vagmita	१८४-१८६
३८.	Life Stress : Relation to Locus of Control Among Working Women's and Housewives	Dr. Rakesh Kumar Singh	१८७-१९१
३९.	Allegorical Expression and Shift of Social Systems in the Vedic Culture	Sanjay Mishra	१९२-२०१
४०.	Who is taking care of the caregiver?"	Dr. Vineet Mishra, Dr. D.N. Pande	२०२-२०४
४१.	Perspective of Clothing in Respect of Culture and Religion	Dr. Sabita	२०५-२१३
४२.	A clinical evaluation of Haritaki Kashaya and Madhu as Kawala in the management of Post Operative Sore Throat due to tracheal intubation under General Anaesthesia	Dr. Anil Dutt, Dr. Sneha pal Dr. Pradeep Awasthi	२१४-२२१
४३.	CONCEPT OF PURUṢA IN CARAKA SAṂHITĀ: A REVIEW	Dr. Dnyaneshwar Deshatwar	२२२-२२९
४४.	Correspondence of Human's Values in Indian Perspective	Satyam Shashank Sonkar	२३०-२३५
४५.	Sarojini Naidu : The Village Songs	Anand Kumar Thakur	२३६-२३९
४४.	पुस्तक समीक्षा - शल्य सुभाषितानि	प्रो० हरीश्वर दीक्षित	२४०
४५.	आम्नायिकी : शोध-निबन्ध प्रकाशन सम्बन्धी नियम एवं निर्देश	प्रधान सम्पादक	२४१
४६.	प्रधान सम्पादक : एक दृष्टि	प्रो० हरीश्वर दीक्षित	२४२

Scanned with ACE Scanner

5

Vol.-16 (July-December, 2019), Peer Reviewed ĀMNĀYIKĪ, ISSN No. 2277-4270, UGC List No. 40768

प्राचीन जातिगान

डॉ० स्वरवन्दना शर्मा*

'जाति' शब्द संस्कृत भाषा की जन् धातु में क्तिन् प्रत्यय जोड़ने से बनता है, जिसका अर्थ है जन्म होना या जन्म देना। जाति शब्द का दूसरा अर्थ है समानता पर आधारित समूह, जिसके लिये जातिवाचक संज्ञा शब्द का प्रयोग किया जाता है। ऐसी वस्तुओं का समूह जिसमें रंग-रूप-कार्य आदि किसी प्रकार की समानता हो, जैसे सजीव और निर्जीव पदार्थ।

संगीत में जाति शब्द तीन तरह से समझा जाता है – राग की जाति, ताल की जाति और जातिगान।

1. **राग की जाति-** स्वरों की संख्या पर आधारित राग-जाति के तीन मुख्य प्रकार हैं –
   - (i) पाँच स्वर – औडव जाति (राग भूपाली)
   - (ii) छः स्वर - षाडव जाति (राग मारवा)
   - (iii) सात स्वर – सम्पूर्ण जाति (राग यमन)
2. **ताल की जाति-** मात्रा संख्या पर आधारित, इसका विशेष प्रयोग कर्नाटक संगीत पद्धति में दिखाई देता है।
   - (i) तीन मात्रा – तिस्र जाति
   - (ii) चार मात्रा – चतस्र जाति
   - (iii) पाँच मात्रा – खंड जाति
   - (iv) सात मात्रा – मिश्र जाति
   - (v) नौ मात्रा - संकीर्ण जाति
3. **प्राचीन जातिगान –**

जो स्थान आज भारतीय संगीत में राग का है, वही स्थान करीब डेढ़ हजार वर्ष पहले जाति का था। वर्तमान रागसंगीत के मूलतत्त्व जाति में दिखाई देते हैं, इसलिये 'जाति' को रागों की माता भी कहते हैं।

जातिगान ही विकास के क्रम में आगे चलकर राग के रूप में दिखाई देता है। भरत के नाट्यशास्त्र में मूर्च्छना के बाद जाति का वर्णन मिलता है। भरत ने जाति की परिभाषा तो नहीं दी है पर नाट्यशास्त्र के टीकाकार अभिनवगुप्त ने जाति के विषय में इस प्रकार समझाया है - **स्वरा एव विशिष्टा सन्निवेशभाजो रक्तिम् अदृष्टाभ्युदयञ्च जनयन्तो जातिरित्युक्तः। × × जातिलक्षणेन दशकेन भवति सन्निवेशः।** अर्थात् दस लक्षणों से बनने वाले विशेष स्वरसन्निवेश को जाति कहते हैं, जो रंजकता और अदृष्ट अभ्युदय देता है।

बृहद्देशी नामक ग्रंथ में मतंग ने जाति के विषय में कहा है -

1. **श्रुति - ग्रहस्वरादिसमूहाज्जायन्त इति जातयः** अर्थात् श्रुति और ग्रहस्वर आदि के समूह से जन्म लेने के कारण जाति कही जाती है।

---

* ऐसासिएट प्रोफेसर, संगीत (गायन), वसंत कन्या महाविद्यालय, वाराणसी।

Scanned with ACE Scanner

6

2. **यस्माज्जायते रसप्रतीतिरारभ्यते इति जातयः** अर्थात् जिससे रस की प्रतीति (जानकारी) की उत्पत्ति हो उसे जाति कहते हैं।

3. **सकलरागादेर्जन्महेतुत्वात् जातयः** अर्थात् सभी रागों के जन्म का कारण होने से जाति कहलाती है और

4. **यथा नराणां ब्राह्मणत्वादयो जातयः** अर्थात् जैसे मनुष्यों में ब्राह्मण आदि जातियाँ होती हैं वैसे ही जाति सामान्य अर्थ में जानी जाती है।

अभिनवगुप्त ने जिन दस लक्षणों की बात कही है वे भरत-नाट्यशास्त्र में निम्नलिखित रूप में उल्लिखित हैं -

ग्रहांशौ तारमन्द्रौ च न्यासोऽपन्यास एव च ।

अल्पत्वं च बहुत्वं च षाडवौडुविते तथा ॥

ये सब दो-दो की जोड़ी में है। जैसे- ग्रह-अंश, तार-मन्द्र, न्यास-अपन्यास, अल्पत्व-बहुत्व और षाडव-औडव।

1,2. **ग्रह- अंश-** जिस स्वर से जातिगान का प्रारंभ होता है, वह ग्रह है तथा जिस स्वर में जाति की रंजकता निर्भर हो, जो राग और रस की उत्पत्ति का मुख्य आधार हो, गाते समय जिस स्वर से पाँच स्वर नीचे और पाँच स्वर ऊपर तक विस्तार हो, जो अन्य स्वरों से घिरा हो, वह अंश स्वर है।

3,4. **तार-मन्द्र –** अंश या न्यास या अपन्यास स्वर से चार, पाँच या सात स्वर ऊपर जाने की तार सीमा और उसी प्रकार चार, पाँच या सात स्वर नीचे जाने की मन्द्र सीमा है।

5,6. **न्यास-अपन्यास-** जहाँ गान समाप्त हो वह न्यास, जहाँ गान के बीच में ठहराव हो वह अपन्यास स्वर है।

7,8. **अल्पत्व-बहुत्व –** अल्पत्व के दो प्रकार हैं - पहला लंघन (लाँघना या छोड़ देना) और दूसरा अनभ्यास (बार-बार न दुहराना)। बहुत्व के भी दो प्रकार हैं - अलंघन (न छोड़ना) और अभ्यास (बार-बार दोहराना)।

9,10. **षाडव-औडव –** सप्तक के सात स्वरों का प्रयोग संपूर्ण होता है, उनमें से एक छोड़कर छह स्वरों का प्रयोग षाडव और दो छोड़ कर पाँच स्वर का प्रयोग औडव कहे जाते हैं।

इन लक्षणों को देखने से समझ में आता है कि आज हमारे संगीत में राग का रूप तय करने के लिये जिन-जिन नियमों को माना जाता हैं वे सब इन्हीं पर आधारित हैं। जैसे राग को प्रारंभ करने वाला स्वर, राग का प्रमुख स्वर, राग के विस्तार के लिये तार या मन्द्र स्वरों का प्रयोग, राग के स्वरों का कम या अधिक प्रयोग और राग के स्वरों की संख्या। अतः जाति को रागों की माता कहना सही है।

उपरिलिखित दस लक्षणों के साथ रंजकता और अभ्युदय (यश-प्राप्ति और आर्थिक लाभ) जो जाति के विषय में कहे हैं वह राग के साथ भी जुड़े हुए हैं, किन्तु अदृष्ट के रूप में जिस पारलौकिक उत्कर्ष की चर्चा है वह जातिगान को अत्यंत विशिष्ट श्रेणी में पहुँचा देता है।

Scanned with ACE Scanner

अङ्क-16 (जुलाई-दिसम्बर, 2019) आम्नायिकी आई.एस.एस.एन.नं.-2277-4270

सामान्यतः गाना शुरू करने के लिये मध्य सा का उच्चारण करते हैं, पर राग गाते समय सा के अतिरिक्त अन्य स्वर भी प्रारंभिक स्वर (ग्रहस्वर) बनते हैं जैसे यमन/बिहाग/ पूरियाकल्याण आदि में मन्द्र नि, वसंत में मं ध सां करते हुए तीव्र म आदि। जाति का सबसे प्रमुख स्वर अंश है, जिसके समान हम राग का वादी स्वर समझते हैं जैसे भूपाली में ग।

जाति के प्रसंग में अंश या न्यास स्वर से 4/5 स्वर ऊपर जाना तार-सीमा और उसी से 4/5 स्वर नीचे जाना मंद्र-सीमा बताई गई है। आज राग के प्रसंग में अंश या वादी स्वर से तो नहीं पर तार और मन्द्र सप्तकों से जुड़े शब्द बन गये हैं। कुछ राग मन्द्र-सप्तक प्रधान और कुछ तार-सप्तक प्रधान हैं यह संगीत का हर विद्यार्थी समझ सकता है उदाहरणार्थ- दरबारीकानड़ा मन्द्र-सप्तक प्रधान और अड़ाना तार-सप्तक प्रधान राग है।

राग के बीच में ठहराव के अलग-अलग स्वर उस राग को उभारते हैं। देशकार में पंचम पर ठहराव बहुत महत्त्व का है। प्रायः आज राग का आखिरी ठहराव मध्य सा पर करते हैं फिर भी कुछ रागों में उस सा के बाद भी कुछ छूटा हुआ लगता है। जैसे आसावरी/जौनपुरी में सा के बाद 'रे म प - ध॒ म प - ' करने पर ही आराम मिलता है। यह न्यास का उदाहरण है।

अल्पत्व-बहुत्व के उदाहरण अनेक हैं। बिहाग के अवरोह में ध और रे का अल्पत्व सब जानते हैं। भूपाली, बिहाग, गौड़सारंग में ग का बहुत्व भी सर्वपरिचित है।

षाडव- औडव के उदाहरण भरे पड़े हैं हमारे राग-संगीत में। संपूर्ण के रूप में यमन, भैरव आदि; षाडव के रूप में मारवा, पूरिया आदि तथा औडव के रूप में भूपाली, मालकौंस आदि भी सब भलीप्रकार जानते हैं। इन उदाहरणों से अच्छी तरह समझा जा सकता है कि प्राचीन जातिगान को रागों की माता कहने की क्या सार्थकता है। यहाँ यह अवश्य स्मरणीय है कि इसी कारण पं0 ओमृकारनाथ ठाकुर ने अपनी ग्रंथमाला 'संगीतांजलि' में रागवर्णन के लिये जाति-लक्षण वाले शब्दों का – ग्रह-अंश, न्यास-उपन्यास का – प्रयोग किया है।

जाति के भेद –

जाति के दो मुख्य भेद हैं - शुद्धा और विकृता।

1. **शुद्धा जाति –** सप्तक के सात स्वरों के नाम वाली सात शुद्धा जातियाँ हैं। इनमें से षाड्जी, आर्षभी, धैवती और नैषादी चार जातियाँ षड्ज ग्राम की और गांधारी, मध्यमा और पंचमी मध्यम ग्राम की हैं।
   शुद्धा जाति के दो लक्षण है-
   (i) अन्यून स्वरा- जिसमें कोई स्वर कम न हो, अर्थात् सातों स्वर वाली।
   (ii) स्व-स्वरांश-ग्रह-न्यासा- जिसमें जाति के अपने नाम वाला स्वर ही ग्रह, अंश, न्यास हो।
2. **विकृता जातियाँ –** शुद्धा जाति के स्वरों की संख्या बदलने से अर्थात् 7 के बदले 6 या 5 स्वरों का प्रयोग करने से और नामस्वर के ग्रह और अंश होने का नियम बदलने से विकृता जातियाँ बनती हैं। याद यह रखना है कि न्यास स्वर वाला नियम कभी नहीं बदलता। संसर्गजा विकृता जातियाँ 11 बताई गई हैं। 7 शुद्धा और 11 विकृता मिलाकर कुल 18 जातियाँ बनती हैं।

Scanned with ACE Scanner

षड्जग्राम की जातियों के स्वर-स्वरूप –

1. **षाड्जी -** षड्जग्राम का षड्ज ही इसमें ग्रह, अंश, न्यास होने से षड्ज ग्राम की मूलस्वरावली ही षाड्जीजाति का रूप है जो करीब-करीब वर्तमान काफी जैसा है-

- - - सा - - रे - ग - - - म - - - प - - ध - नि

वर्तमान स्वर – सा रे ग म प ध नि

2. **आर्षभी -** षड्जग्राम का ऋषभ इसमें न्यास तथा ग्रह, अंश होने के कारण इसका स्वरूप वर्तमान भैरवी जैसा है –

- - रे – ग - - - म - - - प - - ध – नि - - - सा

वर्तमान स्वर- सा रे ग म प ध नि

3. **धैवती-** षड्जग्राम का धैवत न्यास स्वर होने के कारण इसका जो स्वररूप दिखाई देता है, वह अपने आप में अनोखा मिश्र राग लगता है क्योंकि आज प्रचलित रागों में ऐसा रूप नहीं दिखता है-

- - ध - नि - - - सा - - रे – ग - - - म - - - प

वर्तमान स्वर- सा रे ग म मं ध नि

इसका 'सा रे ग म' भैरवी का, 'म मं ध' ललित अथवा 'सा रे ग मं' तोड़ी, 'म मं ध' ललित और 'ध नि' पुनः भैरवी प्रतीत होता है।

4. **नैषादी-** षड्जग्राम का निषाद न्यास स्वर होने से इसका स्वररूप वर्तमान शुद्ध स्वर सप्तक वाला बनता है जिसे हम बिलावल के रूप में पहचानते हैं -

- नि - - - सा - - रे – ग - - - म - - - प - - ध

वर्तमान स्वर- सा रे ग म प ध नि

मध्यमग्राम की जातियों के स्वर-स्वरूप -

5. **गान्धारी –** मध्यमग्राम का गान्धार इसका न्यास स्वर है, इसके स्वर आज के कल्याण (यमन) के स्वर हैं –

- ग - - -म - - प - - - ध - नि - - - सा - -रे

वर्तमान स्वर- सा रे ग मं प ध नि

6. **मध्यमा-** मध्यमग्राम का मध्यम न्यासस्वर होने से इसका स्वररूप वर्तमान खमाज जैसा होता है-

- - - म - - प - - - ध - नि - - - सा - - रे - ग

वर्तमान स्वर- सा रे ग म प ध नि

भरत ने मध्यमग्राम की मध्यमा और पंचमी जातियों में स्वर-साधारण प्रयोग अर्थात् दोनों विकृत स्वर अंतर गांधार और काकली निषाद का प्रयोग करने को कहा है। स्वर-साधारण के साथ मध्यमा जाति के स्वररूप में आज के दोनों म और दोनों नि आ जाते हैं, इसलिये इसमें ऐसे राग समा जाते हैं जिनमें दो म और दो नि का प्रयोग होता है -

Scanned with ACE Scanner

- अं - म - - प - - - ध - नि - का - सा - - रे - ग (- अं - म)
गा   नि   गा

वर्तमान स्वर- ऩि सा रे ग म मं प ध नि (- नि - सां)

7. पंचमी- मध्यमग्राम का पंचम इसमें न्यास स्वर है और इसमें भी स्वर-साधारण (अंतर गांधार और काकली निषाद) के प्रयोग के कारण वर्तमान दोनों ग, दोनों ध और कोमल नि वाला स्वर समूह मिलता है-

- - प - - - ध – नि - का - सा - - रे - ग - अं - म
नि   गा

वर्तमान स्वर- सा रे ग ग म प ध ध नि

इसमें आसावरी और कानड़ा अंग के राग आ सकते हैं।

इन 7 शुद्धा जातियों के अतिरिक्त 11 संसर्गजा जातियों के नाम इस प्रकार हैं–

क्र.सं.	संसर्गजा जाति का नाम	ग्राम	जाति-संसर्ग	वर्तमान रागों की समानता
1.	षड्जकैशिकी	षड्ज	षाड्जी, गांधारी	काफी, कल्याण
2.	षड्जोदीच्यवा	षड्ज	षाड्जी, गांधारी, धैवती	काफी, कल्याण, तोड़ी, भैरवी ललित
3.	षड्जमध्यमा	षड्ज	षाड्जी, मध्यमा	काफी, खमाज
4.	गान्धारोदीच्यवा	मध्यम	षाड्जी, गांधारी, धैवती, मध्यमा	काफी, कल्याण, तोड़ी, भैरवी, ललित, खमाज
5.	मध्यमोदीच्यवा	मध्यम	गांधारी, पंचमी, धैवती, मध्यमा	कल्याण, आसावरी, तोड़ी, भैरवी, ललित, खमाज
6.	रक्तगान्धारी	मध्यम	गांधारी, पंचमी, नैषादी, मध्यमा	कल्याण, आसावरी, बिलावल खमाज
7.	आन्ध्री	मध्यम	गांधारी, षाड्जी	कल्याण, काफी
8.	नन्दयन्ती	मध्यम	गांधारी, पंचमी, आर्षमी	कल्याण, आसावरी, भैरवी
9.	गान्धारपंचमी	मध्यम	गांधारी, पंचमी	कल्याण, आसावरी
10.	कार्मारवी	मध्यम	नैषादी, आर्षभी, पंचमी	बिलावल, भैरवी, आसावरी
11.	कैशिकी	मध्यम	षाड्जी, गांधारी, मध्यमा, पंचमी, नैषादी	काफी, कल्याण, खमाज, आसावरी, बिलावल

इस प्रकार जाति के लक्षणों में वर्तमान रागों के नियम तथा शुद्ध तथा संसर्गजा जातियों में भिन्न-भिन्न स्वरावली तथा स्वरसमुदाय मिलने के कारण अलग-अलग रागों को मिलाने के लिये भी आधार मिलता है।

अतः यह जानना सुखद है कि प्राचीन जातिगान न केवल हमारी सांगीतिक विचार की परंपरा का अत्यंत समृद्ध दृष्टिकोण सामने लाता है अपितु साक्षात् प्रयोग की विविधताओं को व्यवस्था देने का मार्गदर्शन भी करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. संगीतांजलि, भाग-6, पं० ओमकारनाथ ठाकुर, वाराणसी, 1962.
2. प्रणवभारती, द्वितीय संस्करण, पं० ओमकारनाथ ठाकुर, पं० ओ०ठा० मेमोरियल एस्टेट, मुंबई, 1997.
3. संगीत : जिज्ञासा और समाधान, डॉ० तेजसिंह टाक, बेकराँ आलमी फाउण्डेशन, लखनऊ, 2001.

O

Scanned with ACE Scanner

1
2-9-3
(1-7) 1

A Debate on Electoral Reforms in India : An Analysis

Not in assessment period.

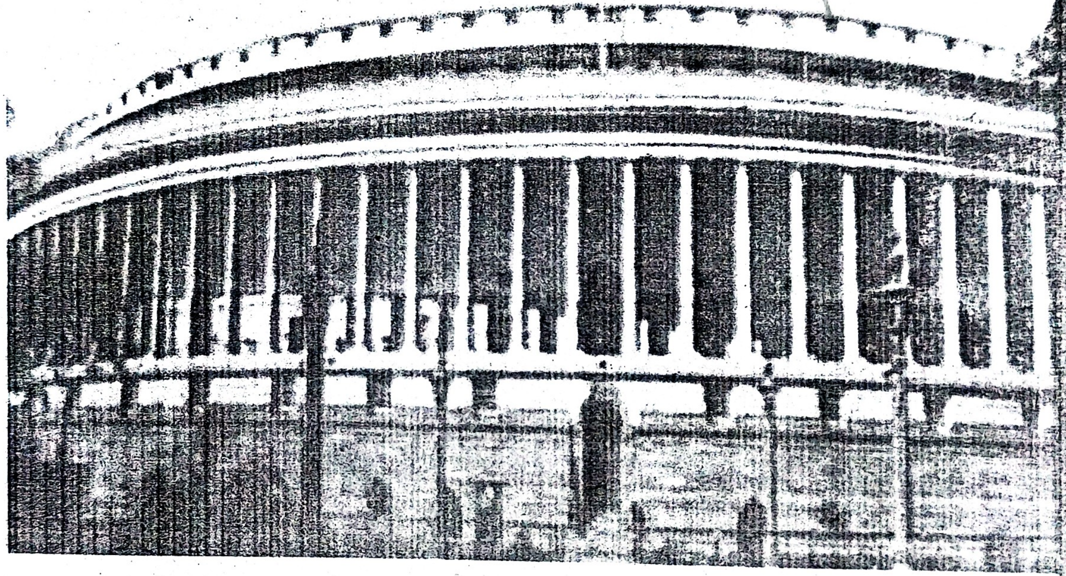

भारत निर्वाचन आयोग
Election Commission of India

Editor-
Dr. Ashish Kumar Sonker

Scanned with ACE Scanner

About the Book

In the last few decades India's electoral system has been changed and improved a lot. This is visible in several areas like legal, institutional, democratic etc.

This book is based on selected lectures and articles of distinguished academicians and personalities who participated in the ICSSR sponsored national seminar on the topic " *A Debate on electoral Reforms in India*", held on 17th-18th September, 2018. The Seminar focused on the attempts made to improve the election system in India. India is densely populated, democratic country. However, a large population is not participating or playing an active role in the election system. The articles and lectures in this book dwell issues like behavioral pattern of the political parties, internal democracy within parties role of media in election, transparency and financial accountability in state funding criminalization of politics and methods of election.

The articles in the book diagnose the ailment of electoral system in India and suggest some conceptive measures. The book may be useful to all those concerned citizens who strive to understand electoral system in India and the changes it requires.

ISBN : 978-93-87199-64-4

9 789387 199644

ISBN : 978-93-87199-64-4

M.R.P. Rs. : 600.00

Scanned with ACE Scanner

A Debate on Electoral Reforms in India : An Analysis

(Based on National Seminar Sponsored by ICSSR)

Edited by Dr. Ashish Kumar Sonker

Patron Prof. Rachna Srivastava
Principal, Vasant Kanya Mahavidyalaya

2020

Kala Prakashan

B. 33/33 A-1, New Saket Colony,
B.H.U. Varanasi 221005

Scanned with ACE Scanner

4

Contents

अध्याय	शीर्षक	पृष्ठ सं०
	प्राक्कथन	v-ix
	Principal's Note	x-xiv
1.	प्रस्तावना– भारत में चुनाव सुधार : एक विश्लेषण *डॉ० आशीष कुमार सोनकर*	17-27
2.	भारत में निर्वाचन सुधार *श्री ओम प्रकाश रावत*	28-32
3.	भारतीय चुनाव में मतदाता व्यवहार एवं उसके निर्धारक तत्त्व : एक विवेचन *डॉ० मनोज कुमार सिंह*	33-39
4.	चुनाव सुधार में विधि आयोग की भूमिका (2015 की रिपोर्ट) *डॉ० सरोज उपाध्याय*	40-45
5.	भारत में चुनाव सुधार और गठबन्धन की सरकारें *शैलेश कुमार राम*	46-54
6.	निर्वाचन–लोकतन्त्र की आधार शिला *डॉ० अर्चना सिंह*	55-63
7.	वाराणसी जनपद के आम चुनाव (सन् 2009 तथा 2014) में युवा दृष्टिकोण का एक तुलनात्मक अध्ययन *उमेश कुमार राय व डॉ० अल्का रानी गुप्ता*	64-71
8.	राजनीतिक दल में आंतरिक लोकतंत्र *ज्योत्सना कुमारी*	72-75
9.	"वर्तमान परिदृश्य में चुनाव प्रणाली में समस्याएं एवं समाधान" *डॉ० पूनम राय*	76-79
10.	भारतीय लोकतंत्र एवं चुनाव सुधार : एक विवेचनात्मक अध्ययन *सन्तलाल भारती व पूजा सिंह*	80-86

Scanned with ACE Scanner

11.	मतदाता जागरुकता गीत *डॉ० स्वरवंदना शर्मा*	87-88
12.	मतदान की शक्ति (स्वरचित गीत) *डॉ० मीनू पाठक*	89-90
13.	**ELECTORAL REFORMS : Significance, Scope and Necessity** *Dr. Subhash C. Kashyap*	91-104
14.	**One Nation One Election (Simultaneous Elections)** *Prof. Sonali Singh*	105-125
15.	**Confused Public Choice in Representative Democracy** *Dr. Indu Upadhyay*	126-138
16.	**Indian Political Parties' Democratic Claims and Intra Party Structure and Culture: Understanding the Paradox** *Dr. Priti Singh*	139-151
17.	**Internal Democracy in Political Parties & Women's Participation in India: A Study** *Dr. Manisha Mishra*	152-166
18.	**Transparency and Financial Accountability in State Funding** Dr. Vijay Kumar	167-179
19.	**Criminalization of Politics in India** *Dr. Akhilesh Kumar Rai*	180-192

Scanned with ACE Scanner

6

अध्याय–11

मतदाता जागरूकता गीत

डॉ० स्वरवन्दना शर्मा*

मतदान केन्द्र चलो गुइयाँ
डाल आवें वोट री।
डाल आवें वोट गुइयाँ
डाल आवें वोट री।
आधार–वोटर कार्ड बना कर
रख पूरी पहचान री।
संग–संग मिल करके जाओ
सभी अठारह पूरी।।1।।
सुबह–सवेरे कलेवा करके
लाइन में लग जाओ री।
वोट डाल, उंगली छपवा फिर
लौट के छान कचौड़ी।।2।।
भाषण हर नेता के सुनकर
सही गलत पहचान री।
अपने माफिक जो पाओ
उसे डालना वोट री।।3।।
कोई पैदल, कोई साइकिल लेकर,
कोई जीप चढ़ो री।
अपने देश के संविधान में
सब इसकी अधिकारी।।4।।

* एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत (गायन), वसन्त कन्या महाविद्यालय, वाराणसी

Scanned with ACE Scanner

7

दादा नाना ताऊ मामा
सबका ध्यान रखो री।
दादी नानी ताई मामी
ना छूटे महतारी।।5।।

टिप्पणी– *प्रस्तुत गीत काशी की संगीत परम्परा के प्रसिद्ध गीत 'कन्हैया घर चलो गुइयाँ, आज खेलें होरी' पर आधारित है।*

•

Scanned with ACE Scanner

1/2-9-4 (1—8)1

(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Not in assessment period

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 13 March 2020 No. III

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

Scanned with ACE Scanner

- **तबले में प्रयुक्त वर्तमान वर्ण** — 274-275
  डॉ. अमित कुमार ईश्वर, तबला संगतकार, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी
- **राजनीति व प्रशासनिक क्षेत्रों में भ्रष्टाचार की समस्या** — 276-278
  डॉ. अनिष कुमार सोनकर, UGC-NET पूर्व शोधछात्र, राजनीति विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
- **बाबासाहब डा. अम्बेडकर के शिक्षा नीति एवं प्रतिबद्ध लोक सेवा** — 279-286
  डॉ. सुनिल कुमार, पीएच. डी. (इतिहास), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- **यजमानी ब्राह्मणों के बीच स्वार्थ संघर्ष और विभेदन** — 287-294
  डॉ. अवध पटेल, पीएच. डी. (इतिहास), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- **चम्पारण में नील की खेती का इतिहास** — 295-300
  डॉ. रवि कुमार, पीएच. डी. (इतिहास), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- **बिहार में नक्सलवाद के कारण : एक अध्ययन** — 301-307
  डॉ. पंकज कुमार, पीएच. डी. (इतिहास), बी. आर ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- **संगीत की दृष्टि से 'प्रबन्ध'** — 308-313
  डॉ. स्वरवन्दना शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत गायन, वसन्त कन्या महाविद्यालय, वाराणसी
- **पटना जिले में वायु-प्रदूषण की पर्यावरणीय समस्या : एक भौगोलिक विश्लेषण** — 314-320
  साधना कुमारी, सहायक प्राध्यापिका, एस.डी. कॉलेज, परैया, गया (बिहार)

Scanned with ACE Scanner

संगीत की दृष्टि से 'प्रबन्ध'

*डॉ. स्वरवन्दना शर्मा**

संगीत की शास्त्रपरक चर्चा के प्रसंग में प्रबन्ध एक विशेष पारिभाषिक शब्द है। 'प्रबन्ध' का अर्थ है प्र अर्थात् प्रकृष्ट रूप से बँधा हुआ। संगीत के सन्दर्भ में प्रबन्ध का अर्थ है स्वर - ताल और पद (शब्द) से प्रकृष्ट रूप से अर्थात् भलीभाँति बँधी हुई रचना, जिसे हम सामान्यतः बंदिश शब्द से कहते हैं। 'बंदिश' में भी बँधे होने का अर्थ समाया हुआ है।

मध्यकाल के संगीतशास्त्र के ग्रंथों में विशेषतः शार्ङ्गदेव के संगीतरत्नाकर और राणा कुंभा के संगीतराज में प्रबन्ध का विस्तृत वर्णन मिलता है, जिसे इस सारणी की सहायता से समझ सकते हैं –

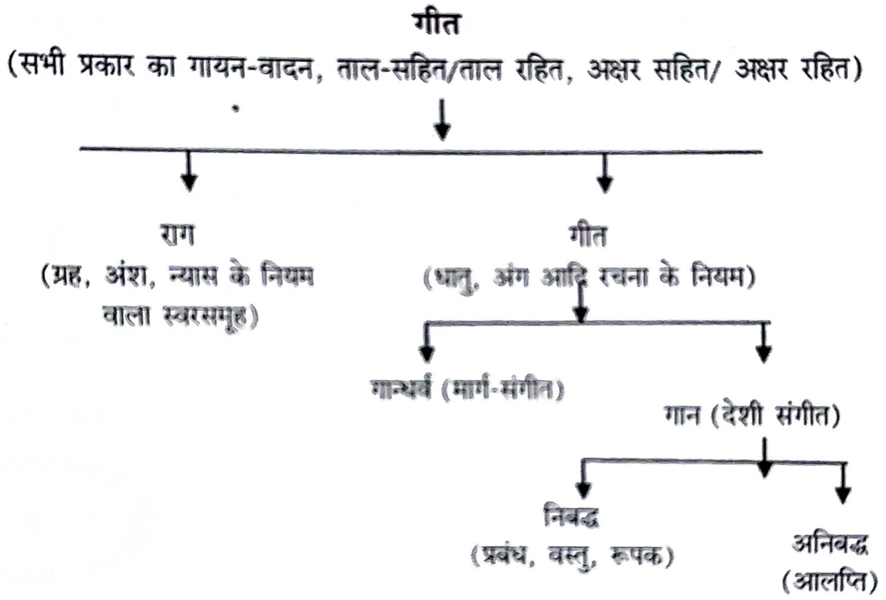

इस सारणी के अंत में निबद्ध (बँधा हुआ) के अंतर्गत प्रबन्ध, वस्तु और रूपक को गिना गया और अनिबद्ध (बिना बँधा हुआ) के अंतर्गत आलप्ति को गिना गया है।

प्रबन्ध में चारों धातु और छहों अंग होते हैं, वस्तु में धातु और अंग की संख्या कम होती है, जिसे आजकल चीज़ कहते हैं, जिसमें नाट्यतत्त्व (कथा या घटना) की प्रधानता हो उसे रूपक कहते हैं।

---

* एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत गायन, वसन्त कन्या महाविद्यालय, वाराणसी

Scanned with ACE Scanner

प्रबन्ध के धातु और अंग - भारतीय शास्त्र-परंपरा में कई बार विषय को स्पष्ट करने के लिये मनुष्य की आकृति का आधार लेते हैं। आयुर्वेद के अनुसार मानवशरीर में वात-पित्त-कफ ये धातुएँ तथा हाथ-पैर आदि अंग है। इसी प्रकार प्रबन्ध-पुरुष की उद्ग्राह, मेलापक, ध्रुव और आभोग ये चार धातुएँ बताई गई हैं। कहीं ध्रुव और आभोग के बीच अन्तरा नाम की पाँचवी धातु भी कही है। ये सब गीत के खण्ड हैं। प्रबंध-पुरुष के छह अंग स्वर, बिरुद,पद, तेन, पाट और ताल कहे गये हैं।

धातु - गीत का सबसे पहला भाग उद्ग्राह है। जिसे मुख्यगीत प्रारंभ करने से पहले गाया जाए। कभी पूर्वालाप या कभी गीत के शब्दों को ही भिन्न रूप से गाना इसका उदाहरण है। ध्रुव वह भाग है जो बार-बार दुहराया जाता है। पुराने गीतों/भजनों में पहली पंक्ति के साथ 'ध्रुव' लिखा जाता है। आजकल इसके समानार्थक 'स्थायी' शब्द का प्रयोग करते हैं। स्थायी एक से अधिक आवर्तन की होने पर केवल पहला आवर्तन ही दोहराते हैं। उद्ग्राह और ध्रुव के बीच मेलापक है जिसका अर्थ है मिलाने वाला। इसके उदाहरण उन स्वरप्रयोगों में ढूँढ सकते हैं जो विशेषतः सुगमसंगीत में गीत की कड़ियों के बीच वाद्यों पर बजाए जाते हैं। अंतिम भाग आभोग कहा जाता है। प्रबंध दो या तीन या चार धातुओं (खंड) से बन सकते हैं। पुराने ध्रुपदों में स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग चार खण्ड होते थे। आजकल ज्यादातर बंदिशों में स्थायी-अंतरा दो धातुएँ (खंड) होती हैं। भजन, गीत, ग़ज़ल आदि में अनेक अंतरे होते हैं। इन्हें संचारी-आभोग का परिवर्तित रूप कह सकते हैं।

अंग - प्रबंध-पुरुष के छह अंग हैं- स्वर, बिरुद, पद, तेन, पाट और ताल। तेन और पद नेत्र के समान, पाट और बिरुद को हस्त, ताल और स्वर को चरण के समान माना गया है।

प्रबन्ध-पुरुष

स्वर- इसके बिना प्रबंध गा ही नहीं सकते, यह अनिवार्य अंग है। जैसे- सा रे ग म।

Scanned with ACE Scanner

बिरुद- गुण या प्रशंसासूचक शब्द। जैसे- उदार, दयालु।

पद – बिरुद और तेन (मंगलसूचक) छोड़कर अन्य शब्द। जैसे- ए री आली पिया बिन।

तेन- मंगलार्थक या ईश्वरवाचक शब्द- हरि ऊँ या हरिनाम संकीर्तन।

पाट- तालवाद्य पर बजने वाले अक्षर - धा तिरकिट तक, ता तिरकिट तक।

यह तालवाद्य पर बजने के साथ अनेक बंदिशों के अंतर्गत आता है और अवनद्धवाद्यों की अपनी प्रबन्ध-रचना (बोल, कायदा, परन) में तो होता ही है।

ताल- संगीत के समय को नापने का साधन। यह भी प्रबन्ध का आवश्यक अंग है।

प्रबंध-पुरुष के चरण के रूप में स्वर-ताल को बताये जाने का कारण यह है कि जैसे बिना पैर के मनुष्य चल नहीं सकता वैसे ही स्वर-ताल के बिना प्रबन्ध अर्थात् बंदिश चल नहीं सकती। प्रबंध के छह अंगों में से छह, पाँच, चार, तीन या दो अंगों से प्रबंध-रचना हो सकती है। प्रायः दो अंगों में स्वर और ताल या कहीं ताल के स्थान पर पद/विरुद/तेन के साथ भी प्रबंध रचना मानी गई है। बंदिश सरगमगीत हो तो स्वर और ताल - ये दो अनिवार्य अंग हैं ही यदि कोई तालबद्ध किये बिना शब्दों को स्वरबद्ध करके गाये तो वहाँ स्वर के साथ पद/बिरुद/तेन यह दूसरा अंग हो जाएगा, जिसमें शब्दों के काल-मान में ताल छिपा रहेगा।

प्रबन्ध के भेद – प्रबन्ध के तीन प्रमुख भेद इस प्रकार हैं –

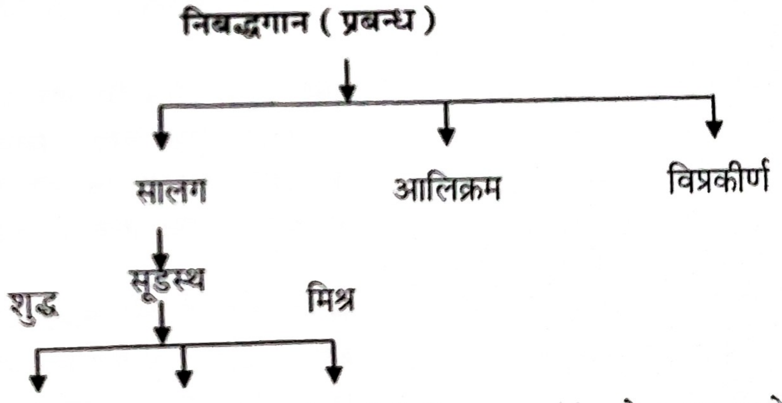

सूडप्रबन्ध में एक रचना के अनेक गीतों में परस्पर संबंध होता था। इसके अनेक भेद-उपभेद थे। आलिक्रम में भी गीतों में संबंध था, पर भेद कुछ कम थे। विप्रकीर्ण परस्पर संबंध के बिना स्वतंत्र रूप से गाने लायक प्रबन्ध थे।

सूडप्रबन्ध का मुख्य उदाहरण जयदेव का गीतगोविंद है जिसमें 24 गीत (अष्टपदियाँ) कथा के रूप में जुड़े हुए हैं। कहीं दो गीतों को जोड़ने के लिये बीच में श्लोक रखे गए हैं।

आलिक्रम प्रबन्धों के प्रकार में पंचतालेश्वर, तालार्णव (तालसमुद्र अर्थात् तालों का भंडार), रागकदम्ब (रागों का समूह) नामों से ही पता चलता है कि इसमें एक से अधिक तालों और रागों का प्रयोग होता रहा होगा। अतः उन गीतों या

Scanned with ACE Scanner

गीतखंडों में परस्पर संबंध होता होगा। अन्यान्य भेदों में गद्य, दण्डक, आर्या, गाथा, त्रोटक जैसे नाम हैं, जो काव्य में छंदों के नाम हैं। इसका एक भेद स्वरार्थ प्रबन्ध है, जिसमें स्वर के अक्षरों की कविता उन्हीं स्वरों में गाई जाती थी। जैसे- 'नीर गगरी गिरी नार से' की स्वरलिपि है - नि रे गगरे गरे निरे सा।

विप्रकीर्ण का अर्थ है फुटकर। जो प्रबन्ध सूड और आलिक्रम में नहीं आते वे विप्रकीर्ण कहे गये। ये अपने आप में स्वतंत्र अर्थात् मुक्तक काव्य की तरह कथासूत्र से अलग माने गये। इसके भेदों में त्रिपदी, चतुष्पदी, षट्पदी, चतुरंग आदि हैं। धम्माली नामक भेद आज का धमार है।

आज गाई जाने वाली ज्यादातर बंदिशें विप्रकीर्ण के अंतर्गत आती हैं। प्रयत्न करने पर कहीं-कहीं बड़े और छोटे ख्याल की बंदिशों में कथा-सूत्र जोड़ सकते हैं। जैसे- राग दरबारी कानड़ा के बड़े ख्याल – 'मुबारकबादियाँ, शादियाँ' और छोटे ख्याल – 'बन्दनवा बाँधो रे बाँधो सब मिल के मालनिया' में शादी की मुबारकबाद और उसके लिए साजसजावट करने की बात कही जा रही है।

वर्तमान समय में प्रबन्ध अर्थात् बंदिशों के निम्न प्रकार अधिक प्रचलित हैं –

ध्रुपद - प्रायः मध्यलय की बंदिश जो 12 मात्रा के चौताल में होती है। सूलताल (10 मात्रा) और तीवरा (7 मात्रा) में द्रुत बंदिश होती है। संगीत की प्रशंसा, ईश्वर या राजा की स्तुति, प्रकृति, दर्शन संबंधी विषयों का वर्णन होता है। पुराने ध्रुपदों में स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग होता था, आजकल पहले दो खंड होते हैं। जैसे- राग यमन का ध्रुपद - तू ही भज भज रे मना।

धमार – 14 मात्रा के धमार नामक ताल में प्रायः राधा-कृष्ण की होरी, फागुन मास, वसन्त ऋतु का वर्णन होता है। जैसे- राग बागेश्री का धमार - आयो फागुन मास।

ध्रुपद-धमार दोनों में बंदिश के पहले नोम्–तोम् का आलाप, बंदिश के साथ-साथ हाथ से ताली देकर लयकारी के साथ उपज का काम और पखावज पर संगत होती है।

खयाल – मुख्यतः विलंबित और द्रुत दो प्रकार के खयाल होते हैं, कुछ बंदिशें मध्यलय की होती हैं। इन सब बंदिशों के साथ आलाप-तान गाते हुए मुखड़े के साथ सम दिखाते हैं। विलंबित ख्याल एकताल (12 मात्रा), झूमरा (14 मात्रा), तिलवाड़ा (16 मात्रा) तालों में और द्रुत ख्याल एकताल (12 मात्रा), आड़ाचौताल (14 मात्रा) और त्रिताल (16 मात्रा) तालों में और मध्यलय ख्याल रूपक (7 मात्रा), झपताल (10 मात्रा) और त्रिताल (16 मात्रा) में गाए जाते हैं। ईश्वर, संगीत, प्रकृति, नायक-नायिका संबंधी वर्णन होता है। गाने में शब्द की तुलना में राग-ताल को महत्त्व दिया जाता है। उदाहरण के लिये राग बिहाग का बड़ा ख्याल - कैसे सुख सोवे नींदरिया और छोटाख्याल - लट उलझी सुलझा जा बालम, दुर्गा का मध्यलय - सखि मोरी रुमझुम। इसकी संगत तबले पर होती है।

तराना- प्रायः अर्थरहित शब्दों को राग-ताल में बाँधते हैं जिसमें स्वर-लय का चमत्कार मुख्य होता है। कुछ विद्वान इसके शब्दों का कूट (गुप्त) अर्थ भी बताते हैं।

Scanned with ACE Scanner

इसका विस्तार कभी तानों से और कभी तेज गति में 'दिर-दिर तननन' बोलों से किया जाता है। जैसे - राग मालकौंस में - तोम तनन तन देरेना।

ठुमरी-दादरा – ये प्रायः साथ बोले जाने वाले नाम हैं और शास्त्रीय संगीत के ध्रुपद-खयाल प्रकारों के बाद उपशास्त्रीय संगीत के रूप में कहे जाते हैं। इनकी बंदिशें प्रायः श्रृंगार-प्रधान होती हैं। ठुमरी की बदिशों का भाव के आधार पर बोल-बनाव से विस्तार किया जाता है। दादरा गतिप्रधान गीतप्रकार है। धीमी लय की ठुमरी दीपचंदी (14 मात्रा) और जतताल (16 मात्रा) में गाते हैं और द्रुतलय की ठुमरी और दादरा ये दोनों ही कहरवा (8 मात्रा) और दादरा (6 मात्रा) तालों में गाते हैं। जैसे- राग भैरवी की धीमी ठुमरी - जा मैं तोसे नाहीं बोलूँ, द्रुतलय की ठुमरी बंदिश की ठुमरी कही जाती है जैसे खमाज में - कोयलिया कूक सुनावे और भैरवी में दादरा - आया करे जरा कह दो साँवरिया से।

टप्पा – टप्पा भी अपेक्षाकृत चंचलगीत प्रकार है, जिसमें खास तरह की घुमावदार तानों का प्रयोग विशेष होता है अतः जटिल और श्रमसाध्य होता है। अधिकतर बंदिशें पंजाबी भाषा में होती हैं। टप्पा के प्रचार-प्रसार के साथ प्रायः शोरी मियाँ का नाम लिया जाता है। 16 मात्रा के पंजाबी या अद्धा तालों के साथ इसे गाया जाता है। राग काफी का प्रसिद्ध टप्पा है - ओ मियाँ जाने वाले।

कुछ विशेष प्रबंधों के प्रकार –

त्रिवट – इसके संबंध में दो मत हैं। पहला मत केवल अवनद्ध वाद्यों के पाटाक्षर से बनी बंदिश को त्रिवट या तिरवट कहता है। दूसरे मत में 'त्रि' शब्द को प्रधानता देते हुए सार्थक शब्द, सरगम और तबले के बोल अथवा तराना, सरगम और तबले के बोल से बनी बंदिश त्रिवट कही जाती है। यह बहुत दुर्लभ प्रकार है। बंदिशः प्रायः द्रुतख्याल वाले तालों में होती है। इसे ख्याल की तरह तान से सजाते हैं। पहले प्रकार का उदाहरण मालकौंस में - त्रक धिकिट धान धान धान धा, ता धा, दूसरा प्रकार भूपाली में- धिरकिट तक धी धी ना।

चतुरंग - इसके नाम से स्पष्ट है कि यह चार अंगों से मिलकर बनी रचना होती है। सार्थक शब्द, तराना, सरगम और तालवाद्य के अक्षरों से यह आकार लेती है। कभी-कभी संस्कृत के श्लोक या उर्दू/अरबी की कुछ लाइनें भी ली जाती हैं। यह भी अप्रचलित प्रकार है। इसका विस्तार भी छोटे ख्याल जैसा जादातर तानों से किया जाता है। जैसे- राग सिंधूरा में – चतरंग गाओ गुनि सब मिल कर।

सादरा – झपताल में बनी ऐसी विशेष रचना जिसमें झपताल का 2-3-2-3 मात्रा-विभाजन वाला छंद छिप जाता है। मोटे तौर पर सुनने में त्रिताल की बंदिश प्रतीत होती है लेकिन बड़ी सुघड़ता और कुशलना से वह झपताल में सजाई हुई होती है। उछलती लय वाली इस बंदिश में आलाप-तानों का बर्ताव भी उससे मेल खाता हुआ लयप्रधान किया जाता है। जैसे राग मारवा में- सखि धूम मची झपताल की। कुछ विद्वान झपताल में बनाये वैशिष्ट्यपूर्ण ध्रुपद को सादरा कहते हैं और उसका संबंध दिल्ली के पास के शाहदरा गाँव से बताते हैं।

Scanned with ACE Scanner

रागसागर या रागमाला – नाम से समझ में आता है कि यह रागों के समूह से बनी रचना है। सबसे अधिक चर्चित रागमाला 'एमन हमीर छाया परे स्याम की, हर दरबार में कहावे नायकी' है जिसमें अलग-अलग रागनामों के शब्द उस-उस राग के स्वरों में बाँधे गये हैं। कुछ ऐसी बंदिशें भी हैं, जिसमें रागनामों से अलग कविता है और अनेक रागों में बिठाई गई है। जैसे 'इंद्रधनु' नाम से 7 रागों में - ए बेलरिया हरी झुकि रही। इसका विस्तार करते समय अंगभूत रागों को सम्हालकर मिलाते हुए गाना होता है।

कैवाड़ प्रबन्ध – केवल पाटवर्णों अर्थात् तबला या पखावज के बोलों से बनी सार्थक या निरर्थक गीतरचना। (एक मन से यह त्रिवट के अंतर्गत होगा।) इसके भेद के रूप में तराना के बोलों से बनी सार्थक गीत-रचना। यह भी बहुत दुर्लभ गीत-प्रकार है। जैसे रागेश्री में- तुम देरे तुम देरे दानी दयादान।

स्वरार्थ प्रबन्ध – नाम से ही स्पष्ट है कि सात स्वरों के अक्षरों से बनी सार्थक कविता, जिसे उन्हीं स्वरों में बाँधा जाए, स्वरार्थ-प्रबन्ध कही जाती है। इसकी अधिकतम 7, कहीं 6 और 5 ही निश्चित अक्षरों की काव्यरचना भी पर्याप्त कुशलता और सजगता माँगती है और संगीत की दृष्टि से राग के रूप को भी संभालने की तार्किक बुद्धि माँगती है। जैसे - 'नीर गगरी गिरी नार से' को इन्हीं अक्षरों वाले स्वरों में यमन में गाया जाएगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संगीत में क्रियाप्रधान और विचारप्रधान दोनों ही पक्षों का सुन्दर समन्वय 'प्रबन्ध' के रूप में दिखाई देता है।

सहायक ग्रन्थ –

1. भावरंगलहरी- प्रथम भाग, पं0 बलवन्तराय भट्ट, वाराणसी, 1964.
2. भावरंगलहरी- द्वितीय भाग, पं0 बलवन्तराय भट्ट, वाराणसी, 1974.
3. संगीत-जिज्ञासा और समाधान, डॉ0 तेजसिंह टाक, बेकरा आलमी फाउण्डेशन, लखनऊ, 2001.
4. भारतीय संगीत कोश, श्रीविमलाकान्त राय चौधरी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975.
5. क्रमिक पुस्तक मालिका- तृतीय भाग, पं0 भातखंडे, संगीत कार्यालय, हाथरस, 1979.
6. क्रमिक पुस्तक मालिका- चतुर्थ भाग, पं0 भातखंडे, संगीत कार्यालय, हाथरस, 1979.
7. संगीतांजलि- द्वितीय भाग, पं0 ओम्कारनाथ ठाकुर, वाराणसी, 1975.
8. रागविज्ञान, प्रथम भाग, पं0 विनायकराव पटवर्धन, संगीत-गौरव-ग्रंथमाला, पुणे, 1978.
9. रागविज्ञान, द्वितीय भाग, पं0 विनायक पटवर्धन, संगीत-गौरव-ग्रंथमाला, पुणे, 1970.
10. रागविज्ञान, तृतीय भाग, पं0 विनायक पटवर्धन, संगीत-गौरव-ग्रंथमाला, पुणे, 1967.

***

Scanned with ACE Scanner

1
2-9-1
(1-10) 1

UGC Journal No. : 41784 ISSN: 2349-5928

HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE REVIEW

(An International Peer Reviewed Refereed Journal)

Not in assessment period.

Editor in Chief

Professor Vinay Kumar Pandey

Department of Jyotish, Faculty of S.V.D.V.

Banaras Hindu University,

Varanasi-221005

Scanned with ACE Scanner

2

Cite this Issue

As

Vol. 6 No. 02 *HSS Review* 2019

Humanities and Social Science Review an International peerreviewed Referred Journal is published bi-annually by Vyas Prakashan for Sunil Kumar Tripathi, Pragyanagar Colony Sunderpur, Varanasi-221005, India. Articles and other contributions for possible publication are welcome. Views expressed in the Articles, Shorter Articles, Book Reviews and all other contributions published in this Journal are those of the respective authors and do not necessarily reflect the views of the Editorial Board of the Humanities and Social Science Review and author shall be solely responsible for the same.

COPYRIGHT © 2019 Sunil Kumar Tripathi, Pragyanagar Colony Sunderpur, Varanasi-221005

ISSN: 2349-5928

Email Id. hssreview1@gmail.com

PH. No.+91 9453036274, +91 9452141671

Printed by: Vikash Printer, Varanasi, India.

Published By: Vyas Prakashan, Man Mandir, Varanasi, India.

Price:₹ 500.00

Scanned with ACE Scanner

Humanities and Social Science Review

Vol. 6 No. 02 *ISSN 2349-5928* *July–December 2019*

CONTENTS

S.N.	Title	Pg. No.
1.	Human Rights and Women in India **Dr. Satyanandan Bhagat**	1-05
2.	The Concept of Live in Relationship and its effect on Indian Marriage Institution **Shresth, Saumya Pandey**	06-12
3.	वैदिकलौकिकवाङ्मयेषु संस्कृतकथासाहित्यपरम्परायास्तुलनात्मकमनुशीलनम् **प्रो0 कौशलेन्द्रपाण्डेयः**	13-22
4.	अहर्गणविमर्शः **डॉ0 चन्द्र कान्तः**	23-29
5.	वैदिक देवताओं का उद्भव एवं विकास **डॉ0 कुमकुम पाठक**	30-35
6.	भारतमाता ब्रूते महाकाव्य में प्रकृति–वर्णन **डॉ0 हीरा पाण्डेय**	36-40
7.	श्रौतयाग एवं उसका वैज्ञानिक महत्व **पशुपतिनाथ मिश्रा**	41-43
8.	प्रसादोत्तर हिन्दी नाटकों में अभिव्यक्त नारी समस्याओं का प्रवृत्तिपरक एवं विकासात्मक विश्लेषण **डॉ0 कुमारी विभा**	44-49
9.	बक्सर जिला में गेहूँ उत्पादन के विकास में आधुनिक तकनीक का प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन **डॉ0 विमलेश कुमार**	50-61
10.	गाँधी जी के दर्शन में एकादश व्रतों का विवेचन (आन्तरिक पर्यावरण विशुद्धि के सन्दर्भ में) **निशा**	62-67
11.	व्याकरणदर्शने पश्यन्त्याश्चिद्रूपता **डॉ0 विक्रम अधिकारी**	68-73
12.	वास्तुशास्त्रे भू–चयनसिद्धान्ताः **डॉ. कृष्णकुमार भार्गव**	74-85

Scanned with ACE Scanner

13. मनुष्यों का श्रेष्ठ नाट्यमण्डप और उसकी रचना–विधि 86-94
उदय नारायण मिश्र

14. दामोदर नदी बेसिन क्षेत्र (झारखण्ड) में कृषि जैव विविधता की स्थिति: एक भौगोलिक अध्ययन 95-108
मीरा ठाकुर

15. वैदिक कृषि : विज्ञान एवं तकनीक का अवलोकन 109-113
कौस्तुभ भट्ट

16. अलंकार : सांगीतिक सन्दर्भ में 114-119
डॉ० स्वरवन्दना शर्मा

17. ज्योतिषशास्त्रे कालमानसमीक्षणम् 120-126
मधु सूदन पाण्डेय

18. वर्तमान में वास्तुशास्त्र का स्वरूप 127-131
आशुतोष तिवारी

19. The Hills of Gaya : A Geographical Study 132-141
Sadhana Kumari

20. Vasudhaiva Kutumbakam: A Journey of Life Towards Collectivism 142-147
Satyam Shashank Sonkar

21. An appraisal of toilet facilities & solid waste management in the slums of KAVAL cities 148-160
Karuna Raj

22. Effects of mustard oil cake on live proteins of channa Punctatus (Bioch) 161-166
Dr. Kumari Smita

23. Impact of Gst on Indian Economy 167-176
Amit Kumar

24. Library of Things A Movement Towards Unused Resources: A Conceptual Study 177-186
Kumar Rohit

Scanned with ACE Scanner

अलंकार : सांगीतिक सन्दर्भ में

डॉ0 स्वरवन्दना शर्मा*

अलंकार शब्द को समझने के लिये सर्वप्रथम संस्कृत-शब्दकोश का आधार लेते हुए जानना उपयोगी है। आपटे संस्कृत-हिन्दी-कोश के अनुसार कृ धातु में अलम् उपसर्ग और घञ् प्रत्यय जोड़ने से अलङ्कार शब्द बनता है, जिसका अर्थ है- सजावट, सजाने की क्रिया, आभूषण, शब्दार्थालंकार। काव्य के गुण-दोष बताने वाला शास्त्र अलङ्कार-शास्त्र कहलाता है। घञ् के स्थान पर ल्युट् प्रत्यय से अलंकरण और क्तिन् प्रत्यय से अलंकृति शब्द बनते हैं, इनका भी अर्थ यही है।[1] 'अलङ्क्रियते अनेन इति अलङ्कारः' अर्थात् जिसके द्वारा सजाया जाए वह अलङ्कार है। या यों समझ लें कि किसी वस्तु के सौन्दर्य, शोभा या आकर्षण को बढ़ाने का साधन अलंकार कहा जाता है।

सामान्य जीवन में मानवशरीर को सुशोभित करने वाले हार, कुंडल, कंकण आदि अलंकारों से सभी सुपरिचित हैं। साहित्य के प्रसंग में अनुप्रास आदि शब्दालंकार और उपमा आदि अर्थालंकारों से भी प्रायः सबका परिचय है। पर संगीत के अभ्यासीजनों के लिये इन सबसे भिन्न, अलंकारों का सांगीतिक सन्दर्भ जानना अत्यंत आवश्यक है और रोचक भी।

संगीत संबंधी शास्त्रीय चर्चा प्रायः भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से प्रारंभ होती है, क्योंकि नाट्य से संबंधित समस्त विद्या और कलाओं का तात्विक विवेचन वहाँ सूत्ररूप में परिलक्षित होता है। अलंकार का महत्त्व समझाते हुए भरतमुनि नाट्यशास्त्र में कहते हैं कि अलंकार रहित गीति की वही स्थिति होती है जो चन्द्र के बिना रात्रि, जल के बिना नदी, पुष्प के बिना लता और भूषण के बिना नारी की होती है –

शशिना रहितेव निशा विजलेव नदी लता विपुष्पेव।
अविभूषितेव च स्त्री गीतिरलङ्कारहीना स्यात्॥[2]

भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के मुख्य प्रतिपाद्य नाट्य के लिये पाठ्य (वाचिक अभिनय) की दृष्टि से छह अलंकार बताये हैं –

उच्चो दीप्तश्च मन्द्रश्च नीचो द्रुत-विलम्बितौ।
पाठ्स्यैते ह्यलङ्काराः × × × ॥[3]

* एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत गायन, वसन्त कन्या महाविद्यालय, वाराणसी

Scanned with ACE Scanner

अर्थात् पाठ्य (वाचिक अभिनय) के छह अलंकार उच्च-दीप्त, मन्द्र-नीच, द्रुत और विलंबित हैं। सारांश में यहाँ इतना ही संकेत करूँगी कि किसी को संबोधन या आश्चर्य या वाद-विवाद में मध्यसप्तक के पंचम से तारसप्तक के ऋषभ तक मध्यगति का प्रयोग उपयोगी होता है, उसी प्रकार कलह, युद्ध का आवाहन, क्रोध का आवेश या गर्वोक्ति या वीरता दिखाने या भय से चीखने में तार सप्तक के उच्च स्वरों का द्रुत गति में प्रयोग प्रभावशाली होता है तथा विराग, दीनता, रुग्णता, निर्वेद या चिन्ता के समय मन्द्र सप्तक के स्वरों का विलंबित गति में प्रयोग प्रभावोत्पादक होता है।[4]

संगीत के सन्दर्भ में वर्ण और अलंकार इनका नाम साथ-साथ लिया जाता है क्योंकि सांगीतिक अलंकार वर्णों पर ही आधारित हैं। नाट्यशास्त्र के अनुसार –

आरोही चावरोही च स्थायीसंचारिणौ तथा।
वर्णाश्चत्वार एवैते ह्यलंकारास्तदाश्रयाः॥[5]

अर्थात् आरोही, अवरोही, स्थायी और संचारी ये चार वर्ण हैं और अलंकार इन पर आश्रित हैं।

शार्ङ्गदेव सङ्गीतरत्नाकर में कहते हैं –

गानक्रियोच्यते वर्णः स चतुर्धा निरूपितः।
स्थाय्यारोह्यवरोही च संचारीत्यथ लक्षणम्॥[6]

अर्थात् गान की क्रिया वर्ण कहलाती है, वह चार प्रकार की बताई गई है - स्थायी, आरोही, अवरोही तथा संचारी। स्थायी अर्थात् एक स्वर पर स्थिर, आरोही में चढ़ता और अवरोही में उतरता क्रम तथा संचारी में ये सभी मिले होते हैं। इसके अतिरिक्त वह यह भी कहते हैं –

विशिष्टवर्णसन्दर्भमलङ्कारः प्रचक्षते।[7]

अर्थात् वर्णों का विशेष संदर्भ अलंकार कहा जाता है।

संगीतशास्त्र के अन्य प्रमुख ग्रन्थ मतंगकृत बृहद्देशी में कहा है –

अलङ्कारशब्देन मण्डनमुच्यते। यथा कटककेयूरादिनालङ्कारेण नारी पुरुषो वा मण्डितः शोभामावहेत् तथा एतैरलङ्कारैः प्रसन्नाद्यादिभिरलङ्कृता वर्णाश्रया गीतिर्गातृश्रोतृणां सुखावहा भवतीति।[8]

अर्थात् अलंकार शब्द से मण्डन (सजावट) कहा जाता है। जैसे कटक, केयूरादि अलंकारों द्वारा नारी अथवा पुरुष मंडित होकर शोभा पाते हैं वैसे ही वर्णों पर आश्रित इन प्रसन्नादि अलंकारों से अलंकृत गीति, गायक और श्रोता दोनों को सुख देती है।

Scanned with ACE Scanner

भरत ने संगीतोपयोगी 33 अलंकार बताये हैं। वर्णों के अनुसार देखने पर स्थायी के 7, आरोही के 13, अवरोही के 5 और संचारी के 14 अलंकार मिलाकर कुल संख्या 39 होती है, लेकिन 6 अलंकार एक से अधिक वर्णों में गिने जाने से मूल संख्या 33 ही रह जाती है। मतंग ने नाम तो लगभग भरत के दिये हुए ही रखे हैं किन्तु उन्हें वर्णों के आधार पर बाँटा नहीं है। ऐसा होते हुए भी अलंकारों के लक्षण दोनों के ग्रंथों में स्पष्ट नहीं है। भरत ने नाम तो गिनाए हैं पर स्वररूप नहीं दिया है। मतंग ने स्वररूप दिये हैं पर पाठ भ्रष्ट और खंडित होने के कारण लक्षण के साथ उसे जोड़ना बहुत कठिन है।[9]

भरत और मतंग के अतिरिक्त अन्यान्य ग्रंथकारों ने भी अलंकारों का निरूपण किया है, विशेष उल्लेखनीय शार्ङ्गदेव कृत संगीतरत्नाकर और अहोबल कृत संगीतपारिजात हैं। यद्यपि इस वर्णन में भी पर्याप्त अंतर दिखाई देता है।

भरत और मतंग के 33 अलंकारों की तुलना में शार्ङ्गदेव ने 63 और अहोबल ने 69 अलंकार कहे हैं। शार्ङ्गदेव ने भरत के समान स्थायी के 7 तो माने हैं, पर 12 आरोही अलंकार जितने ही 12 अलंकार अवरोही वर्ण के भी कहे हैं, संचारी वर्ण के 25 और अतिरिक्त 7 अलंकार बताए हैं। अहोबल ने संचारी 26, तालबद्ध 7 और रागोपयोगी 5 अलंकार बताकर शार्ङ्गदेव से 6 अधिक बताये हैं। कुछ नाम भरत, मतंग, शार्ङ्गदेव तथा अहोबल में एक जैसे हैं। अहोबल ने स्थायीवर्ण-अलंकारों के वैकल्पिक नाम भी दिये हैं। यहाँ यह जानना भी जरूरी है कि अलंकारों के प्रसंग में मन्द्र, प्रसन्न और मृदु का अर्थ भी समान है, तार और दीप्त का अर्थ एक समान है। यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि इस प्रकार 'मन्द्र-मध्य-तार' इन तीन सप्तकों वाले अर्थ से यह भिन्न अर्थ है, जहाँ मूर्च्छना का प्रथम स्वर मन्द्र और उससे दुगुना तार अथवा पहले वाला स्वर मन्द्र और बाद वाला तार कहलाता है।

यही बातें शार्ङ्गदेव ने इस रूप में स्पष्ट की हैं-

मन्द्रः प्रकरणेऽत्र स्यान्मूर्च्छनाप्रथमः स्वरः।
स एव द्विगुणस्तारः पूर्वः पूर्वोऽथवा भवेत्॥
मन्द्रः परस्ततस्तारः प्रसन्नो मृदुरित्यपि॥
मन्द्रस्तारस्तु दीप्तः स्यात् × × ×॥[10]

अलंकारों के समान नाम होने पर भी लक्षण और स्वररूपों का अंतर कुछ उदाहरणों से स्पष्ट होगा -

Scanned with ACE Scanner

अलंकार : सांगीतिक सन्दर्भ में

क्र.सं.	अलंकार	भरत का लक्षण	मतंग का लक्षण	मतंग का स्वर-रूप
1.	प्रसन्नादि	क्रमशः दीप्त	मन्द्र से तार तक आरोह	सा री गा मा पा धा नी सां
2.	प्रसन्नांत	व्यस्त (उल्टा)	तार से मन्द्र तक अवरोह	सां नी धा पा मा गा री सा
3.	प्रसन्नाद्यन्त	आदि अंत में प्रसन्न	आदि अंत में प्रसन्न, मध्य में तार	सा री गा मा पा धा नी सां सां नी धा पा मा गा री सा
4.	प्रसन्नमध्य	मध्य में प्रसन्न (मन्द्र)	मध्य में मन्द्र, आदि अंत में तार	सां नी धा पा मा गा री सा सा री गा मा पा धा नी सां
		शार्ङ्गदेव का स्वर-रूप	**अहोबल का वैकल्पिक नाम**	**अहोबल का स्वररूप**
1(अ)	प्रसन्नादि	स स सं	भद्र	सरिस रिगरि गमग मपम
2(अ)	प्रसन्नान्त	सं स स	नन्द	सस रिरि सस। रिरि गग रिरि
3(अ)	प्रसन्नाद्यन्त	स सं स	जित	सगरिस। रिमगरि
4(अ)	प्रसन्नमध्य	सं स सं	सोम	सस गग रिरि सस

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि संगीत के शोभाधायक अलंकारों के विषय में शास्त्रकारों का चिन्तन कितना गहरा था, भले ही उनके विचारों में भिन्नता थी। अलंकारों का क्रम और उनके नाम हमारे लिये मनन-चिन्तन का नवीन द्वार खोल देते हैं। यद्यपि आज हम निश्चित क्रम और सुनिश्चित नाम के साथ अलंकार नहीं जानते हैं तथापि इन अलंकारों का अभ्यास और किसी न किसी रूप में प्रयोग तो संगीत शिक्षा और मंच-प्रदर्शन का अनिवार्य अंग है ही। इस तरह आज हम शास्त्रीय क्रम और नामों की दृष्टि से अलंकारों से भले अपरिचित हों पर व्यावहारिक दृष्टि से उनसे सुपरिचित हैं और भरपूर प्रयोग करते हैं।

संगीतशास्त्रग्रंथों में वर्णित सभी अलंकारों की चर्चा तो यहाँ संभव नहीं है पर कुछ अत्यन्त परिचित और प्रचलित अलंकारों का नाम जानना अवश्य अत्यंत रोचक और ज्ञानवर्धक होगा।

पूर्वोक्त उदाहरणों में से शार्ङ्गदेव के बताये प्रसन्नादि, प्रसन्नान्त, प्रसन्नाद्यन्त प्रसन्नमध्य ये **स्थायी वर्णसंबंधी अलंकार** हैं। शार्ङ्गदेव के अनुसार अन्य वर्णों के कुछ अलंकार इस प्रकार हैं–

आरोही वर्णसंबंधी अलंकार (क्रम 8 से 19 तक) :

क्रम 8. विस्तीर्ण- सा रे ग म प ध नि (अवरोही क्रम 20)

9. निष्कर्ष - (क) सासा रेरे गग मम पप धध निनि (अवरोही क्रम 21)

(ख) सासासा रेरेरे गगग

अथवा – सासासासा रेरेरेरे गगगग, (दूसरा नाम गात्रवर्ण)

12. हसित - सा रेरे गगग मममम पपपपप (अवरोही क्रम 24)

धधधधधध निनिनिनिनिनिनि

Scanned with ACE Scanner

13. प्रेंखित - सारे रेग गम मप पध धनि (अवरोही क्रम 25)

15. सन्धिप्रच्छादन - सारेग गमप पधनि (अवरोही क्रम 27)

19. वेणी - सासासा रेरेरे गगग ममम पपप धधध (अवरोही क्रम 31)

(नि का प्रयोग होने पर गात्रवर्ण)

अवरोही वर्णसंबंधी अलंकार - क्रम संख्या 20-31 तक आरोही के क्रम से अवरोही अलंकार हैं।

संचारी वर्ण संबंधी अलंकार -

क्रम 32. मन्द्रादि - सागरे रेमग गपम मधप पनिध

33. मन्द्रमध्य - गसारे मरेग पगम धमप निपध

34. मन्द्रान्त - रेगसा गमरे मपग पधम धनिप

35. प्रस्तार - साग रेम गप मध पनि

36. प्रसाद - सारेसा रेगरे गमग मपम पधप धनिध

40. आक्षेप - सारेग रेगम गमप मपध पधनि

42. उद्वाहित - सारेगरे रेगमग गमपम मपधप पधनिध

45. प्रेंख - सारेरेसा रेगगरे गममग मपपम पधधप धनिनिध

48. क्रम - सारे सारेग सारेगम, रेग रेगम रेगमप, गम गमप गमपध, मप मपध मपधनि

54. हुंकार - सारेसा, सारेगरेसा, सारेगमगरेसा, सारेगमपमगरेसा, सारेगमपधपमगरेसा, सारेगमपधनिधपमगरेसा

अतिरिक्त अलंकार –

क्रम 58. मन्द्रतार प्रसन्न- सा सां नि ध प म ग रे सा

62. उपलोल – सारे सारे गरे गरे, रेग रेग मग मग, गम गम पम पम, मप मप धप धप, पध पध निध निध[12]

प्रसिद्ध संगीत-मर्मज्ञ श्री विमलाकान्त रायचौधरी अलंकार को समझाते हुए कहते हैं कि अलंकार के दो भेद हैं- वर्णालंकार और शब्दालंकार। स्थायी-आरोही-अवरोही-संचारी वर्णों पर आधारित अलंकार वर्णालंकार कहे जाते हैं, जिनकी चर्चा पहले की जा चुकी है और जो ध्वनि-उच्चारण की विशेषता से संबंध रखते हैं वे शब्दालंकार कहे जाते हैं जिसके उदाहरण मींड, गमक, कृन्तन, आस, खटका, जमजमा आदि हैं। उनके अनुसार हस्तक्रिया भी शब्दालंकार के अंतर्गत गिनी जाती है। यह अलंकार का व्यापक अर्थ है।[13]

Scanned with ACE Scanner

शार्ङ्गदेव के अलंकार-लक्षण को समझाते हुए प्रो0 सुभद्रा चौधरी ने उल्लेख किया है कि भरत के टीकाकार अभिनवगुप्त के अनुसार 'अलंकार' शब्द में 'अलं' पर्याप्ति को बताने वाला है, इसलिये गीति में परिपूर्णता लाने के कारण उन्हें 'अलंकार' कहा जाता है।[14]

सन्दर्भ क्रम-

1. आप्टे संस्कृत-हिन्दी-कोश, पृ0 102.
2. ना0शा0 29/45.
3. ना0शा0 17/106.
4. प्र0भा0 पृ0 279.
5. ना0शा0 29/17.
6. सं0र0 1/6/1.
7. सं0र0 1/6/2.
8. प्र0भा0 पृ0 266.
9. प्र0भा0 पृ0 279.
10. सं0र0 1/6/6-8.
11. प्र0भा0 पृ0 280 तथा 284.
12. भा0सं0को0 पृ0 4-7.
13. भा0सं0को0 पृ0 7.
14. सं0र0 पृ0 151.

सहायक ग्रन्थ –

1. संस्कृत-हिन्दी-कोश, वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1973.
2. नाट्यशास्त्र, काव्यमाला - 42, भारतीय विद्या-प्रकाशन, दिल्ली, 1983.
3. प्रणवभारती (द्वितीय संस्करण), पं0 ओम्कारनाथ ठाकुर, पं0 ओ0ठा0 मेमोरियल एस्टेट, मुम्बई-1997.
4. संगीत - रत्नाकर, प्रथम खंड, व्याख्या और अनुवाद- प्रो0 सुभद्रा चौधरी, (राधा) पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली, 2000.
5. भारतीय संगीत-कोश, श्री विमलाकान्त राय चौधरी, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 1975.

O

Scanned with ACE Scanner